Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Wednesday, 03 May 2023 ● Year : 01 ● Issue : 106 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

अगर आप किसी काम में खुद को दक्ष नहीं बनायेंगे, तो आपके लिए धन कमाना बहुत मुश्किल होगा।

दीपिका के साथ पहली बार दिखेंगी करीना

SHARE

सेंसेक्स	:	61,354.71
निफ्टी	:	18,147.65

SARAFA

सोना	:	5,715
चांदी	:	80.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

गैंगस्टर टिल्लू ताजपुरीया की जेल में हत्या

NEW DELHI : पश्चिमी जिले स्थित तिहाड़ जेल में एक बार फिर गैंगवार की वारदात को अंजाम दिया गया। दिल्ली का शातिर और कुख्यात बदमाश टिल्लू ताजपुरिया (33) की चार कैदियों ने लोहे की ग्रिल से प्रहार कर हत्या कर दी। घटना मंगलवार सुबह 6:10 बजे की है। टिल्लू तिहाड़ जेल की हाई रिस्क में बंद था। जेल प्रवक्ता अरविंद कुमार ने बताया कि तिहाड़ जेल में बंद गैंगस्टर टिल्लू ताजपूरीया पर जेल नंबर-8 में बंद योगेश टूंडा, दीपक उर्फ तितर, राजेश और रियाज खान ने लोहे की ग्रिल से हमला किया। जिसमें टिल्लू के साथ एक अन्य कैदी रोहित भी घायल हो गया। दोनों को दीनदयाल अस्पताल उपाध्याय (डीडीयू) अस्पताल लाया गया, जहां टिल्लू को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं, घायल रोहित का उपचार चल रहा है। पश्चिमी जिले के एडिशनल डीसीपी अक्षत कौशल ने मंगलवार को बताया कि पुलिस को सुबह डीडीयू अस्पताल से जानकारी मिली थी कि तिहाड़ जेल के दो कैदी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिसमें टिल्लू ताजपुरिया की हालत बहुत नाजुक है। कुछ देर बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जबकि दूसरा कैदी रोहित घायल है। जेल सूत्रों की माने तो दिल्ली के रोहिणी कोर्ट शूटआउट के आरोपित गैंगस्टर टिल्लू ताजपुरिया पर प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सदस्यों योगेश टुंडा और अन्य ने तिहाड़ जेल में हमला कर उसे मार गिराया।

देश में कोरोना के 3,325 नए मरीज, 10 की मौत

NEW DELHI : देश में पिछले 24 घंटे के दौरान कोरोना के 3,325 नए मरीज सामने आए हैं। इस अवधि में कोरोना वायरस से संक्रमित 10 मरीजों की मौत हो गई। वहीं 6,379 मरीज स्वस्थ हुए। अब तक 4,43,77,257 मरीज स्वस्थ हो चुके हैं और रिकवरी रेट 98.72 प्रतिशत है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय से मंगलवार को उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार देश में कोरोना के एक्टिव मरीजों की संख्या बढ़कर 44,175 हो गई है, जबकि दैनिक संक्रमण दर 2.29 प्रतिशत है। टीकाकरण की बात करें तो पिछले 24 घंटे में 2,180 खुराक दी गई है। वहीं, देश में अबतक कोरोना से बचाव के टीके की 220.66 करोड़ खुराक दी जा चुकी है।

पश्चिम बंगाल में भाजपा नेता को घर से उठा ले गए, कर दी हत्या

KOLKATA : पश्चिम बंगाल में एक और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता की हत्या कर दी गई। पूर्व मेदिनीपुर जिला के मोयना में सोमवार शाम हुए इस हत्याकांड से क्षेत्र में दहशत है। भाजपा ने मंगलवार सुबह इसका विवरण जारी किया है। भाजपा ने कहा है-' मोयना के बूथ अध्यक्ष विजय कृष्ण दौलुई सपत्नीक घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्हें पत्नी के सामने रोककर पीटा गया। इसके बाद वह घर चले गए। कुछ समय बाद बाइक से तृणमूल के कई नेता उनके घर पहुंचे और उन्हें उठा कर ले गए। फिर उनकी हत्या कर शव घर से कुछ दूरी पर फेंक दिया।' इस घटना के विरोध में मोयना से भाजपा के विधायक अशोक डिंडा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने थाने का घेराव किया।

BOKARO में NIA ने दी दबिश, बच्चा सिंह सहित तीन लोगों के ठिकानों पर की छापेमारी, दो मोबाइल, कागजात, बैनर-पोस्टर जब्त

PHOTON NEWS BOKARO : बोकारो थर्मल एवं महुआटांड़ थाना क्षेत्र में मंगलवार की अहले सुबह रांची एनआईए की टीम ने छापेमारी की। छापेमारी में बेरमो एवं बोकारो के विभिन्न थानों के पुलिस पदाधिकारी एवं सैकड़ों की संख्या में जवान शामिल थे। रांची एनआईए की टीम सबसे पहले बोकारो थर्मल निशन हाट स्थित मजदूर संगठन समिति के केंद्रीय महासचिव बच्चा सिंह के आवास संख्या एचएमडी 50 एवं नागेश्वर महतो के आवास संख्या एचएमडी 36 ए सहित निशन हाट झोपड़पट्टी स्थित संजय तुरी के निजी आवास पर एकसाथ छापेमारी की।

छापेमारी के दौरान तीनों के आवासों को चारों तरफ से सैट के जवानों एवं पुलिस पदाधिकारियों ने घेर रखा था। नागेश्वर महतो के आवास पर ताला बंद रहने के कारण टीम बाहर बैठकर इंतजार कर रही थी। बाद में समिति के सदस्य रामचंद्र महतो के आने पर टीम के पदाधिकारियों से बात हुई और रामचंद्र महतो ने एक अन्य व्यक्ति को साथ लाकर नागेश्वर महतो के आवास का ताला तोड़कर आवास में प्रवेश किया। छापेमारी के दौरान एनआईए टीम ने मसंस के केंद्रीय महासचिव के आवास से दो मोबाइल, कुछ पंपलेट, कागजात एवं बैनर, पोस्टर जब्त किया।

नागेश्वर महतो के आवास से उसकी पत्नी और बेटी के दो बैंक पासबुक और पंपलेट, कागजात जब्त किए। संजय तुरी के आवास से एक मोबाइल, पंपलेट और कागजात जब्त कर टीम अपने साथ ले गयी। एनआईए की टीम में शामिल पदाधिकारियों ने पूछे जाने पर कहा कि एनआईए की टीम छापेमारी में शामिल है।मामले को लेकर पूछे जाने पर कुछ भी बताने से इंकार किया और कहा कि रांची मुख्यालय से इस संबंध में जानकारी हासिल कर सकते हैं। दूसरी ओर छापेमारी में शामिल चौथी टीम महुआटांड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत अइयर निवासी अनिल हांसदा के घर पर छापेमारी कर रही है। मामले को लेकर बोकारो थर्मल थाना के निरीक्षक शैलेश कुमार चौहान सहित बेरमो एसडीपीओ सतीश चंद्र झा ने भी पूछे जाने पर कुछ भी बता पाने में असमर्थता जताई। जबकि सूत्रों का कहना है कि टीम छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में बारूदी सुरंग में पिछले दिनों मारे गए 10 जवानों सहित एक चालक के मौत के मामले में नक्सली कनेक्शन को लेकर ही छापेमारी कर सुराग हासिल करने में लगी हुई है।

जम्मू-कश्मीर में 12 स्थानों पर एनआईए का छापा

SRINAGAR : राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एएनआई) ने मंगलवार सुबह आतंकवाद से जुड़े मामले में जम्मू-कश्मीर में 12 स्थानों पर छापा मारा है। विभिन्न आतंकी संगठनों के सहयोगियों के खिलाफ शुरू की गई। एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि कश्मीर घाटी के अवंतीपोरा, पुलवामा, अनंतनाग और श्रीनगर के अलावा जम्मू और पुंछ जिलों में विभिन्न स्थानों पर छापा मारा गया है। उन्होंने कहा कि यह कार्रवाई पूरी होने के बाद ही विस्तृत जानकारी साझा की

बोकारो थर्मल एवं महुआटांड़ थाना क्षेत्र में छापेमारी के दौरान तैनात सुरक्षाकर्मी ● फोटोन न्यूज

सेना जमीन घोटाले मामले में दिलीप घोष समेत चार को ईडी ने भेजा समन

RANCHI : सेना जमीन घोटाले मामले में मनी लॉन्ड्रिंग के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जांच कर रही है। इस मामले में ईडी ने कोलकाता के जगत बंधु टी स्टेट के दिलीप घोष समेत चार लोगों को समन जारी किया है। जिन लोगों को समन जारी किया गया है, उनमें जमीन दलाल राजेश राय, भरत प्रसाद, लखन सिंह और जगतबंधु टी स्टेट के दिलीप घोष शामिल हैं। ईडी ने आठ मई को राजेश राय, भरत प्रसाद और लखन सिंह को ईडी के ऑफिस बुलाया है। साथ ही दिलीप घोष को 10 मई को बुलाया गया है। जानकारी के मुताबिक, राजेश राय ने सबसे पहले विवादित चेशायर होम वाली जमीन की रजिस्ट्री करवाई थी। लखन प्रसाद और भरत प्रसाद दोनों ही रांची में जमीन कारोबार से जुड़े हैं। चेशायर होम जमीन की दलाली के एवज में इन्हें अच्छी रकम मिली थी।

CM SOREN ने 80 उत्कृष्ट विद्यालयों का किया उद्घाटन

इस साल 25,000 शिक्षकों की होगी नियुक्ति, बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना लक्ष्य : सीएम

BUREAU CHIEF RANCHI : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने धुर्वा स्थित ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव उच्च विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में राज्यभर में 80 उत्कृष्ट विद्यालयों का उद्घाटन किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं जानता हूं कि स्कूलों में शिक्षकों की कमी है। कई कानूनी और तकनीकी बाधाओं की वजह से शिक्षकों की नियुक्ति अटकी हुई थी लेकिन अब सभी बाधाओं को दूर कर लिया गया है। अलग-अलग चरणों में इस साल के मध्य तक 25,000 शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी जो अलग-अलग विद्यालयों में सेवा देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि अभी तो 80 उत्कृष्ट विद्यालयों के साथ शुरूआत हुई है लेकिन बहुत जल्द प्रदेश में 5,000 ऐसे स्कूल विकसित किए जाएंगे। लक्ष्य साफ है। बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अपने आप में अनोखा विद्यालय होगा, जहां बच्चे निजी स्कूल के तर्ज पर पढ़ाई करेंगे।

रांची के धुर्वा स्थित ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव उच्च विद्यालय में दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत करते एवं जगन्नाथपुर में आदर्श विद्यालय का रिबन काटकर उद्घाटन करते सीएम हेमंत सोरेन ● फोटोन न्यूज

उत्कृष्ट विद्यालयों में होगी प्रबंधन समिति

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रबंधन समिति होगी। सरकार बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराएगी लेकिन उत्कृष्ट स्कूलों का सफल संचालन उसमें पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों, शिक्षकों, प्रबंधन तथा विभाग की कार्यशैली पर निर्भर करता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहीं पास में ही विधानसभा है। मैं कभी भी स्कूलों का निरीक्षण करने आ सकता हूं इसलिए उम्मीद करता हूं कि मैंने जो सुझाव दिए हैं उनका गंभीरता से पालन होगा। मुख्यमंत्री सोरेन ने कहा कि झारखंड में शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं की कमी है। शिक्षकों की कमी है। यदि 2 कमरों का स्कूल है और उसमें 1 शिक्षक तो समस्या की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है। हालांकि, हमारी सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया कराने को लेकर प्रतिबद्ध है।

राज्यभर में खोले जाएंगे पांच हजार स्कूल

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि अभी निजी स्कूलों में पढ़ाई के लिए बच्चों की कतार दिखती है। उम्मीद करता हूं कि उत्कृष्ट विद्यालयों में पढ़ने के लिए भी ऐसी ही कतारें दिखेंगी। उन्होंने कहा कि राज्यभर में ऐसे 5 हजार स्कूल खोले जाएंगे। उन्होंने कहा कि जिन स्कूलों का प्रदर्शन अच्छा होगा वहां के प्रबंधन, शिक्षकों और बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा। सीएम सोरेन ने कहा कि अभी कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की बच्चियों ने जेईई मेन की परीक्षा में सफलता हासिल की है। मैं उन सभी बच्चियों से मुलाकात करूंगा और यह सुनिश्चित करूंगा कि उनकी पढ़ाई में बाधा ना आए। मैं चाहता हूं कि इन उत्कृष्ट विद्यालयों को देश में मॉडल स्कूलों के रूप में विकसित करें।

प्रधानमंत्री मोदी ने बाटला हाउस मुठभेड़ का किया जिक्र, बोले आतंकवादियों का तुष्टीकरण करती है कांग्रेस

हमने आदिवासियों के लिए 400 से अधिक एकलव्य मॉडल स्कूल बनाए, कांग्रेस ने यूनिफॉर्म में भी किया घोटाला : PM

AGEMCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कांग्रेस पर आतंक और आतंकवादियों के तुष्टीकरण का आरोप लगाया। उन्होंने दिल्ली के बाटला हाउस में हुई मुठभेड़ का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों के मारे जाने की खबर सुनकर कांग्रेस की सबसे बड़ी नेता की आंखों में आंसू आ गए थे। यह लोग सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक में देश की सेनाओं के सामर्थ्य पर सवाल खड़ा करते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने मंगलवार को कर्नाटक के चित्रदुर्ग में एक चुनावी जनसभा में कहा कि आजादी के अमृतकाल में कर्नाटक का यह पहला चुनाव है। यह चुनाव तय करेगा कि अगले 25 वर्षों में कर्नाटक विकास की किस ऊंचाई को छू लेगा। उन्होंने कांग्रेस पर जनता से झूठे वादे करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कभी भी उनकी पार्टी द्वारा किए गए कार्यों का मुकाबला नहीं कर सकती। इसके साथ ही उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में किए गए कार्यों का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने आदिवासियों के लिए 400 से अधिक एकलव्य मॉडल स्कूल बनाए। वहीं कांग्रेस सरकार ने बच्चों के यूनिफॉर्म में भी घोटाला कर दिया।

विपक्षी कांग्रेस और जनता दल सेक्यूलर की प्राथमिकता में राज्य का विकास ना होने का आरोप लगाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि दोनों दलों से जनता को सावधान रहना चाहिए। यह दिखावे के लिए दो हैं जबकि इनकी करतूतें एक जैसी हैं। यह दोनों ही भ्रष्टाचार और परिवारवाद की राजनीति करते हैं और समाज को बांटते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार का संकल्प अपर भद्रा सिंचाई परियोजना को पूरा करना है। इसके लिए साढ़े 5 हजार करोड़ का बजट तय किया गया है। कांग्रेस और जनता दल सेक्यूलर ने हमेशा इस परियोजना को नजरअंदाज किया है। असल में ये दोनों दल किसानों की चिंता नहीं करते। प्रधानमंत्री ने भाजपा के संकल्प पत्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसमें कर्नाटक को देश का नंबर वन राज्य बनाने, आधुनिक ढांचागत सुविधा तैयार करने और महिला सशक्तीकरण पर जोर दिया गया है।

कर्नाटक में चुनावी जनसभा को संबोधित करते प्रधानमंत्री ● एजेंसी

गुमला में PLFI के तीन उग्रवादी गिरफ्तार, हथियार-गोली बरामद

गिरफ्तार उग्रवादियों की जानकारी देते गुमला एसपी ● फोटोन न्यूज

GUMLA : गुमला जिला के बिशुनपुर थाना की पुलिस ने पीएलएफआई के तीन नक्सलियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार नक्सलियों में लोहरदगा जिले के पेशरार निवासी विवेक उरांव (25 वर्ष), सोमनाथ खेरवार (21 वर्ष) और बिशुनपुर थाना के जमटी गांव निवासी बसंत महली (23 वर्ष) है। पुलिस ने इनकी निशानदेही में एक लोडेड देसी कट्टा, जिसमें 0.315 की गोली लगी हुई, घटनास्थल से मजदूरों का लूटे गये चार मोबाइल, पीएलएफआई संगठन के दो खाली पर्चे और एक बाइक को बरामद किया है। इस बात की जानकारी एसपी डॉ एहतेशाम वकारीब ने दिया। एसपी के मुताबिक, गिरफ्तार तीनों नक्सलियों ने कुछ दिन पहले बिशुनपुर थाना के टेमरकरचा में सड़क निर्माण में लगे वाहनों को आग के हवाले किया था।

सरकार बनने पर बजरंग दल और पीएफआई जैसे संगठनों पर होगी कार्रवाई : खड़गे

PHOTON NEWS NEW DELHI

कर्नाटक में घोषणा पत्र जारी करते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● द फोटोन न्यूज

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि कर्नाटक में उनकी सरकार बनने के बाद बजरंग दल और पीएफआई जैसे संगठनों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

खड़गे ने मंगलवार को कर्नाटक विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस का घोषणा पत्र जारी कर कहा कि हम जनता से किए वादों को पूरा करेंगे । इस दौरान खड़गे ने बजरंग दल पर कार्रवाई की बात भी कही। जिसको लेकर विश्व हिन्दू परिषद सहित भाजपा ने आपत्ति जताई है।

खड़गे ने अपने भाषण के दौरान कहा कि राज्य में सरकार बनने के बाद पुरानी पेंशन योजना को बहाल करेंगे। गृह ज्योति योजना के जरिए राज्य की जनता को 200 यूनिट मुफ्त बिजली देंगे। महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा की योजना, नारियल किसानों और अन्य के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित किया जाएगा।

खड़गे ने कहा कि उनकी सरकार दूध पर सब्सिडी पांच रुपये से बढ़ाकर 07 रुपये करेगी। कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में महिला मुखिया को हर महीने 2000 रुपये देने, बेरोजगार ग्रेजुएट युवाओं को दो साल के लिए 3,000 रुपये प्रति माह और बेरोजगार डिप्लोमा धारकों को 1,500 रुपये प्रति माह भत्ता देने का वादा किया है। कांग्रेस का दावा है कि राज्य में सरकार बनने के बाद वह अन्नभाग्य योजना के तहत 10 किलो चावल प्रतिमाह देगी।

पहले इन्होंने श्रीराम को ताले में बंद किया, अब बजरंगबली की बारी : पीएम

PHOTON NEWS NEW DELHI

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फाईल फोटो।

कांग्रेस ने मंगलवार को कर्नाटक विधानसभा के लिए अपना घोषणा पत्र जारी किया था। इसमें कांग्रेस ने सरकार बनने पर बजरंग दल जैसे संगठनों को बैन करने का वादा किया है। इस पर अब पीएम नरेंद्र मोदी ने जवाब देते हुए कहा- ये वही कांग्रेस है जिसने पहले श्रीराम को ताले में बंद किया, अब बजरंगबली को बंद करने की बात कह रहे। पीएम ने यहां अयोध्या में राम लला मंदिर वाली घटना का जिक्र किया, उस वक्त कांग्रेस सरकार थी।

कांग्रेस ने घोषणा पत्र जारी करते हुए बजरंग दल और पीएफआई का जिक्र करते हुए कहा था कि धर्म के नाम पर नफरत फैलाने वालों पर एक्शन लेंगे। जवाब में पीएम मोदी ने विजय नगर की रैली में कहा- आज हनुमान जी की इस पवित्र भूमि को नमन करना मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है और दुर्भाग्य देखिए, मैं आज जब यहां हनुमान जी को नमन करने आया हूं उसी समय कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में बजरंग दल को बैन करने का ऐलान कर दिया।

कांग्रेस ने हर परिवार को 200 यूनिट मुफ्त बिजली, परिवार की प्रत्येक महिला मुखिया को हर महीने 2 हजार रुपए देने की घोषणा की है। पार्टी ने यूथ वोटर्स को साधने के लिए भी घोषणाएं की हैं। इसके तहत बेरोजगार ग्रेजुएट को दो साल के लिए 3 हजार रुपए और डिप्लोमा होल्डर्स को 1,500 रुपए प्रति माह देने का ऐलान किया है। इसके अलावा राज्य सरकार की बसों में महिलाओं को मुफ्त यात्रा का भी वादा किया है।

BRIEF NEWS

बजरंग दल पर प्रतिबंध को जनता नहीं करेगी स्वीकार, विहिप का कांग्रेस पर हमला

NEW DELHI : विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) ने कर्नाटक विधानसभा चुनाव के लिए जारी कांग्रेस के घोषणा पत्र में बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने की बात कहे जाने को लेकर उस पर जमकर प्रहार किया है। विहिप ने कहा है कि वह कांग्रेस के गलत मंसूबों को पूरा नहीं होने देगी। कांग्रेस सिमी और पीएफआई जैसे आतंकी संगठनों को संरक्षण प्रदान करती है। विहिप इसका विरोध करती रही है और यह आगे भी जारी रहेगा। विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने मंगलवार को एक वीडियो वक्तव्य में कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल को गलत तरीके से बदनाम करने की साजिश को देश की जनता स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने घोषणा पत्र को लेकर कांग्रेस नेता सोनिया गांधी पर भी सीधा निशाना साधा और कहा कि उन्होंने संसद में सिमी जैसे संगठनों पर प्रतिबंध का विरोध किया था और उनकी पार्टी ने सड़क पर इसके विरोध में प्रदर्शन किया था। इससे कांग्रेस का छिपा एजेंडा सामने आ गया है। विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने राष्ट्रवादी बनाम देशद्रोही की विचारधारा का मुद्दा उठाते हुए कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि इतनी दुर्गति होने के बाद भी कांग्रेस को अकल नहीं आ रही है। उन्होंने कांग्रेस पर हिन्दू विरोधी होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस का नाटक बहुत हो चुका और ये घोषणा पत्र ही कांग्रेस के अंत का कारक बनेगा। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस के घोषणा पत्र में बजरंग दल की तुलना प्रतिबंधित आतंकी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया से करते हुए उस पर प्रतिबंध लगाने की बात कही गयी है। बजरंग दल विहिप की एक इकाई है। संगठन आज कांग्रेस के घोषणापत्र के मुद्दे पर पार्टी के 24 अकबर रोड स्थित मुख्यालय पर उसके खिलाफ प्रदर्शन भी करेगा।

आजसू पार्टी की चतरा जिला कमेटी भंग

RANCHI : आजसू पार्टी ने चतरा जिला कमेटी को तत्काल प्रभाव से भंग कर दिया गया है। पार्टी के केंद्रीय मुख्य प्रवक्ता डॉ. देवशरण भगत ने मंगलवार को कहा कि केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो के निर्देश पर यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही नए सिरे से नई कमेटी का गठन किया जाएगा। डॉ. भगत ने कहा कि गैर जवाबदेह, लापरवाह तथा निष्क्रिय नेतृत्व के कारण चतरा जिला में पार्टी के गठन, पुनर्गठन एवं विस्तार का कार्य शिथिल पड़ गया था। साथ ही पार्टी की अन्य गतिविधियां भी अपेक्षित रफ्तार से नहीं चल रही थी। सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

यूथ इंटक झारखंड के कार्यकारी अध्यक्ष बने मोहम्मद अबूजर

RANCHI : यूथ इंटक झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष रवि चौबे ने संगठन का विस्तार करते हुए मोहम्मद अबूजर को अध्यक्ष नियुक्त किया। उन्होंने कहा कि इंटक झारखंड के मजदूरों के हित में लगातार कार्यरत है। औद्योगिक खनन इस्पात असंगठित क्षेत्रों में मजदूरों के समाधान के लिए तत्पर रहता है। सर्वसम्मति से प्रदेश उपाध्यक्ष वसीम अकरम, प्रदेश संगठन सचिव वीर प्रताप सिंह व प्रदेश संयुक्त सचिव विश्वनाथ मरांडी को बनाया गया। नियुक्ति के दौरान रांची जिले के कार्यकारी अध्यक्ष मोहम्मद अबूजर ने कहा नामकुम टाटीसिल्वे, तुपुदाना, कोकर औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत मजदूरों के वेतनमान, सुरक्षा, पेंशन को लेकर हमेशा जन जागरण कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया जाता है। ठेकेदारों द्वारा धोखाधड़ी करने पर संज्ञान लेते हुए समाधान का स्वरूप तैयार किया जाता है।

सीएम हेमन्त ने ऑनलाइन के माध्यम से किया चार उत्कृष्ट विद्यालयों का उद्घाटन

HAZARIBAG : जिले के चार विद्यालयों को उत्कृष्ट विद्यालयों के लिए चयनित किया गया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने हजारीबाग जिले में चयनित जिला स्कूल हजारीबाग, राजकीय बालिका प्लस2 विद्यालय हजारीबाग, कस्तूरबा गांधी विद्यालय चुरचू एवं माडल विद्यालय बरही को राजकीय कार्यक्रम में उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में ऑनलाइन के माध्यम से उद्घाटन किया गया। राज्य सरकार पूरे राज्य में प्रथम चरण के तहत 80 विद्यालयों का चयन कर उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुविधाओं से लैस कर रही है। इस क्रम में चयनित विद्यालयों के शिक्षकों को भी उच्च गुणवत्ता का प्रशिक्षण दिया गया है। इसी कड़ी में हजारीबाग जिले से भी उक्त चारों विद्यालयों का चयन उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में किया गया।राजकीय बालिका प्लस 2 विद्यालय में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम का ऑनलाइन प्रसारण किया गया।उपायुक्त नैन्सी सहाय ने कहा कि जिले के चार विद्यालयों का उत्कृष्ट विद्यालय में चयनित होना गर्व की बात है। इन विद्यालयों में सीबीएसई मॉडल पर बच्चों की पढ़ाई होगी। इस मौके पर प्रशिक्षण आईएएस शताब्दी मजूमदार, क्षेत्रीय संयुक्त शिक्षा उप निदेशक सुमन लता टोपनो, डीएवी के सेवानिवृत प्राचार्य डॉ. अशोक, जिला शिक्षा पदाधिकारी उपेन्द्र नारायण, सांसद प्रतिनिधि कोडरमा भूवनेश्वर पटेल, सदर विधायक प्रतिनिधि दिनेश सिंह राठौर आदि ने भी अपने-अपने विचार रखे।

सरयू राय ने हेमंत सोरेन को आधे कैबिनेट का सीएम बताया

HAZARIBAG : बीमार चल रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री यशवंत सिन्हा से मुलाकात करने पहुंचे निर्दलीय विधायक सरयू राय ने राज्य सरकार और मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए उन्हें आधे कैबिनेट का मुख्यमंत्री बताया है। साथ ही कहा कि आधी कैबिनेट कांग्रेस चला रही है। दरअसल, सरयू राय इन दिनों राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता का एक महिला के साथ वायरल अश्लील वीडियो और प्रतिबंधित पिस्टल को लेकर प्रखर हैं। परिसदन में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य के स्वास्थ्य मंत्री को लेकर जारी अश्लील वीडियो को लेकर प्राथमिकी दर्ज करायी गई है लेकिन इस पर आगे जांच नहीं हो रही है। साथ ही कहा कि मंत्री के कार्यालय से जारी महिला का सफाई वीडियो में उसका नाम पता और कुछ भी जानकारी नहीं दी गई है। राय ने कहा कि कि पांच दिन पूर्व उन्होंने इस विषय को लेकर जमशेदपुर में आवेदन देकर कार्रवाई की मांग डीसी से की है लेकिन इस दिशा में भी एक भी कदम आगे कार्रवाई नहीं हुई। इससे यह प्रमाणित होता है कि यह वीडियो और अवैध पिस्टल दोनों सत्य है।

गृहमंत्री शाह आज एनडीएमसी के 4400 कर्मियों को सौंपेंगे नियमितीकरण का पत्र

NEW DELHI : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) के 4400 कर्मियों को नियमितीकरण का बुधवार को नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। गृह मंत्रालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय के अनुसार बुधवार शाम 04:30 बजे तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में गृहमत्री शाह 4400 कर्मियों के नियमितीकरण का पत्र उन्हें सौंपेंगे। उल्लेखनीय है कि केजरीवाल सरकार ने इन 4400 लोगों को पक्की नौकरी देने के संबंध में केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा था, जिसे गृहमंत्री ने स्वीकार करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री को बीते फरवरी महीने में पत्र लिखकर अवगत कराया था। अब शाह एनडीएमसी के 4,400 कर्मचारियों को नियमितीकरण का पत्र देने जा रहे हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पौत्र अरुण गांधी का निधन, आज ही होगा अंतिम संस्कार

MUMBAI : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पौत्र अरुण गांधी (89 वर्ष) का मंगलवार सुबह कोल्हापुर में स्थित हणवरवाड़ी इलाके में स्थित अवनी संस्थान में निधन हो गया। अरुण गांधी के बेटे तुषार गांधी ने बताया कि आज ही उनके पिता का अंतिम संस्कार हणवरवाड़ी के श्मशान घाट पर किया जाएगा। अरुण गांधी महात्मा गांधी के पुत्र मणिलाल गांधी के बेटे थे। अरुण गांधी का जन्म 14 अप्रैल, 1934 को दक्षिण अफ्रीका के डरबन में हुआ था। अरुण गांधी के पिता मणिलाल गांधी इंडियन ओपिनियन अखबार के संपादक थे और उनकी मां इंडियन ओपिनियन की प्रकाशक थीं। अरुण गांधी ने शुरू से ही सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर काम किया। अरुण गांधी एक लेखक भी थे। उनकी किताब द गिफ्ट ऑफ एंगल-एंड अदर लेसन्स फ्रॉम माय ग्रैंड फादर काफी लोकप्रिय हुई थी।

देश के आर्थिक विकास में महाराष्ट्र और गुजरात का महत्वपूर्ण योगदान : राज्यपाल

PHOTON NEWS RANCHI

महाराष्ट्र और गुजरात राज्य स्थापना दिवस परआयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि महाराष्ट्र और गुजरात दोनों राज्यों का समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं गौरवशाली इतिहास रहा है। इस पर प्रत्येक देशवासी को गर्व है। इन राज्यों का हमारे राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। आज अगर भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, तो उसमें इन दोनों राज्यों का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि झारखंड में रहनेवाले महाराष्ट्र एवं गुजरात के लोग यहां विभिन्न क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। राज्यपाल सोमवार को महाराष्ट्र और गुजरात राज्य स्थापना दिवस पर राज भवन में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र महान छत्रपति शिवाजी महाराज की भूमि है। छत्रपति शिवाजी महाराज का महान और दूरदर्शी व्यक्तित्व सम्पूर्ण विश्व को प्रेरित करता रहा है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि "नमक सत्याग्रह" या "दांडी मार्च", "बारडोली सत्याग्रह", "भारत छोड़ो आंदोलन" जैसे आंदोलन इन क्षेत्रों में ही उत्पन्न हुए थे। इन आंदोलनों में देश भर के लोगों की व्यापक भागीदारी देखी गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं सरदार वल्लभभाई पटेल के कुशल नेतृत्व का सदैव स्मरण किया जायेगा।

राज्यपाल ने कहा कि गुजरात अपनी बेहतर उद्यमशीलता के लिए भी जाना जाता है। यह उद्योगों और व्यवसायों का केन्द्र बन गया है, वहीं मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी के रूप में जाना जाता है, वहां बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज सहित कई प्रमुख वित्तीय संस्थान मौजूद हैं। पर्यटन के क्षेत्र में ये राज्य अग्रणी हैं।

राज्यपाल के प्रधान सचिव डॉ नितिन कुलकर्णी ने कहा कि महाराष्ट्र और गुजरात दोनों भाई-भाई हैं और दोनों प्रगति के शिखर पर विद्यमान हैं। इनका सामाजिक-आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान है। इस अवसर पर गुजराती सामाज की ओर से गरबा नृत्य, मराठी समाज के वंदना धामोरी की ओर से भजन, उपायुक्त, लोहरदगा डॉ. वाघमारे प्रसाद कृष्ण की ओर से गायन प्रस्तुत किया गया।

शरद पवार ने राकांपा अध्यक्ष पद छोड़ने का किया ऐलान, कहा- नहीं लड़ेंगे कोई चुनाव

PHOTON NEWS MUMBAI

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष शरद पवार ने कहा कि वे अब राकांपा अध्यक्ष पद छोड़ रहे हैं और इसके आगे कोई भी चुनाव नहीं लड़ेंगे। शरद पवार ने कहा कि वे राकांपा की बैठकों में शामिल होकर पार्टी को उचित मार्गदर्शन करते रहेंगे।

वाईबी चव्हाण सभागृह में मंगलवार को शरद पवार की लिखी पुस्तक का विमोचन हो रहा था। इसी अवसर पर शरद पवार की घोषणा के बाद पूरा सभागृह स्तब्ध रह गया। शरद पवार ने अपनी किताब के विमोचन कार्यक्रम के अध्यक्षीय भाषण में कहा कि सार्वजनिक जीवन में कहीं रुकने पर विचार करना आवश्यक है। इसलिए मैंने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि 1999 में एनसीपी के गठन के बाद से पिछले 24 वर्षों से एनसीपी के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हूं। यह पूरा सफर 1 मई 1960 से सार्वजनिक जीवन में शुरू हुआ और पिछले 63 सालों से लगातार चल रहा है।

उन्होंने कहा कि इन 56 वर्षों में मैं किसी न किसी सदन के सदस्य या मंत्री के रूप में लगातार काम करता रहा हूं। राज्यसभा की सदस्यता के अगले 3 साल बचे हैं। इस अवधि के दौरान मैं राज्य और देश के मामलों पर अधिक ध्यान दूंगा, इसके अतिरिक्त मैं कोई अन्य जिम्मेदारी नहीं लूंगा। उन्होंने कहा कि मैं शिक्षा, कृषि, सहयोग, खेल, संस्कृति के क्षेत्र में और अधिक काम करने का इरादा रखता हूं। साथ ही मैं युवाओं, छात्र संगठनों, श्रमिकों, दलितों, आदिवासियों और समाज के अन्य कमजोर वर्गों के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करूंगा।

शरद पवार के इस ऐलान के बाद छगन भुजबल, जितेंद्र आव्हाड और दिलीप वलसे पाटिल सहित राकांपा नेताओं ने कहा, हम राकांपा अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के आपके फैसले को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। हम चाहते हैं कि आप अपने फैसले पर पुनर्विचार करें।

सांसद दीपक प्रकाश और विधायक समरी लाल सहित 16 के खिलाफ आरोप गठित

PHOTON NEWS RANCHI

एमपी-एमएलए कोर्ट के विशेष न्यायिक दंडाधिकारी अनामिका किस्कू की अदालत में कांके में किसान विरोधी आंदोलन में शामिल रहे भाजपा सांसद दीपक प्रकाश, कांके विधायक समरीलाल सहित 16 आरोपितों के खिलाफ आरोप गठित किया गया।

मंगलवार को आरोप गठन के दौरान सभी आरोपितों को उनके खिलाफ लगे आरोप को पढ़कर सुनाया गया। सभी ने अपने खिलाफ लगे आरोप को गलत बताया। अब इस मामले में ट्रायल शुरू होगा। आरोपितों के तरफ से अधिवक्ता सुधीर श्रीवास्तव ने पैरवी की। सांसद दीपक प्रकाश और विधायक समरी लाल सहित अन्य के खिलाफ आईपीसी की धारा 188,269,270 और एपेडेमिक एक्ट के तहत आरोप गठित किया गया है।

यह मामला जून 2021 का है। अंचल निरीक्षक कांके अंचल के लिखित आवेदन पर कांके थाना में दीपक प्रकाश, समरीलाल सहित अन्य पर केस दर्ज किया गया था। प्राथमिकी में आरोप है कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश, कांके विधायक समरीलाल के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने राज्य सरकार के विरुद्ध धरना प्रदर्शन कर मांग किया था कि किसानों का ऋण माफ हो, फसल की उचित कीमत मिले, बीज की उपलब्धता को राज्य सरकार उपलब्ध कराए।

भाकपा कार्यालय में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस

सिटी बस कर्मचारियों को परमानेंट करे हेमंत सरकार : महेंद्र पाठक

PHOTON NEWS RANCHI

मजदूर दिवस पर बोलते महेंद्र पाठक व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

भाकपा कार्यालय में सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस धूमधाम से मनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर भाकपा के प्रदेश सचिव महेंद्र पाठक ने झंडोत्तोलन कर शहीद वेदी पर पुष्पांजलि अर्पित की। सभा की अध्यक्षता इम्तियाज खान ने किया और संचालन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जिला सचिव अजय कुमार सिंह ने किया।

मौके पर पाठक ने कहा कि केंद्र सरकार मजदूरों के सारे अधिकार को छीन कर 44 श्रम कानून को बदल कर चार कोड में बदल दिया। इनके सारे अधिकार छीन लिया। 2024 के बाद मुस्तैदी से उस कानून को सरकार लागू करेगी। उन्होंने कहा कि नगर निगम में ठेकेदारी प्रथा समाप्त कर सिटी बस कर्मचारियों को हेमंत सरकार परमानेंट करे। रांची बस सेवा के कर्मचारियों को बगैर मजदूरी के गाड़ी चलवाया जा रहा है। चारों ओर मजदूरों को काफी शोषण किया जा रहा है। बिचौलिए के माध्यम से नगर निगम की बस सेवा चलाया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को लेकर जयपुर में हुआ कार्यक्रम आयोजन

प्रधानमंत्री के विजन की वजह से दुनियाभर में योग बना ऐतिहासिक इवेंट : सोनोवाल

PHOTON NEWS JAIPUR

कार्यक्रम में उपस्थित केंद्रीय मंत्री सोनोवाल व अन्य। ● द फोटोन न्यूज

केंद्रीय आयुष मंत्री सर्वानन्द सोनोवाल ने कहा कि योग को विज्ञान की पद्धति मानकर आज दुनियाभर में अपनाया जा रहा है। देश के गांव-गांव तक योग की संस्कृति का प्रसार करने के लिए संकल्पित होकर कार्य किया जा रहा है। देश एवं दुनिया में प्रति वर्ष मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए इस बार काउंट डाउन की शृंखला में जयपुर में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

केंद्रीय मंत्री सोनोवाल मंगलवार को सीकर रोड स्थित भवानी निकेतन शिक्षा समिति में केंद्रीय आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित 'योग महोत्सव- 2023' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस में अब 50 दिन बाकी हैं। जयपुर में विशाल योग महोत्सव से काउंटडाउन शुरू हो गया है। सोनोवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन की वजह से आज योग को दुनियाभर में लोग अपना रहे हैं। 21 जून को दुनियाभर में योग दिवस मनाया जाएगा। इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने को लेकर उत्साह लगातार बढ़ता जा रहा है। इस वर्ष के आईडीवाई-2023 पर आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्र में कॉमन योग प्रोटोकॉल का प्रदर्शन अपने आप में एक नायाब उपलब्धि होगी।

सोनोवाल ने कहा कि योग महोत्सव से प्रत्येक राज्य में आयुष ग्राम के माध्यम से ग्रामीण आबादी को जोड़ने का प्रयास होगा। एक आयुष ग्राम दो-तीन गांवों का एक समूह होगा और इसमें औसतन 3 हजार से अधिक आबादी शामिल होगी। चिह्नित गांवों में योग प्रशिक्षकों की नियुक्ति कर विशेष प्रशिक्षण के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा, ताकि प्रत्येक आयुष ग्राम 21 जून को कॉमन योग प्रोटोकॉल का प्रदर्शन करने के लिए तैयार रहे। ग्रामीणों इलाकों में योग का संदेश पहुंचाने के लिए कम्यूनिटी रेडियो नेटवर्क का उपयोग करते हुए देश के 2 लाख से अधिक गांवों में सीवाईपी प्रशिक्षण के लिए इस वर्ष सामान्य सेवा केंद्रों के नेटवर्क का भी उपयोग किया जाएगा।

कार्यक्रम में राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि योग कोई थेरेपी भर नहीं है बल्कि आत्मविकास का सबसे बड़ा माध्यम है। मानसिक शांति एवं संतोष के लिए योग सर्वथा उपयोगी है। यौगिक दिनचर्या से जुड़कर जीवन की जटिलताओं को आसानी से हल किया जा सकता है। शास्त्रों में योग को स्वस्थ जीवन की कला और विज्ञान कहा गया है। योग को

सिल्ली के पूर्व विधायक अमित महतो अब लड़ सकेंगे चुनाव

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस एस चंद्रशेखर और जस्टिस रत्नाकर भेंगरा की खंडपीठ ने सिल्ली के पूर्व विधायक अमित महतो की सजा एक साल कम कर दी है। इसके बाद वह अगला चुनाव लड़ सकेंगे। सिविल कोर्ट से एक आपराधिक मामले में दो साल की सजा सुनाए जाने के बाद वह चुनाव लड़ने के अयोग्य हो गए थे, लेकिन मंगलवार को उन्हें बड़ी राहत मिली है। दरअसल, साल 2006 में सोनाहातू में सीओ कार्यालय का घेराव किया गया था। इसमें पूर्व विधायक अमित महतो भी अपने लोगों के साथ मौजूद थे। उसी दौरान तत्कालीन सीओ आलोक कुमार घायल हो गये थे। फिर इसे लेकर सोनाहातू थाना में अधिकारी संग मारपीट और सरकारी काम में बाधा का मामला दर्ज कराया गया था। इसमें सिविल कोर्ट ने अमित महतो को दो साल की सजा सुनाई थी।

उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को ब्लैक लिस्टेड करने के निर्णय लेने पर हाईकोर्ट ने लगाई रोक

जेएसबीसीएल ने शो कॉज कर उर्मिला इंटरनेशनल को ब्लैक लिस्टेड करने की कही है बात

SPECIAL REPORTER RANCHI : उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड की ओर से झारखंड स्टेट बेवरेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (जेएसबीसीएल) द्वारा शोकॉज नोटिस कर ब्लैक लिस्टेड करने एवं बेवरेज कारपोरेशन द्वारा उर्मिला इंटरनेशनल को 2 जोन में मैन पावर देने के लिए टेंडर में सफल करने के बाद भी उन दोनों जोन का फिर से टेंडर निकालने को चुनौती देने वाली दाखिल याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने उर्मिला इंटरनेशनल को अंतरिम राहत देते हुए जेएसबीसीएल द्वारा उसे ब्लैक लिस्टेड करने पर फाइनल निर्णय लेने पर रोक लगा दिया है। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 27 जुलाई निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता अक्षांश किशोर ने पैरवी की। दरअसल, प्रार्थी उर्मिला इंटरनेशनल ने झारखंड उत्पाद झारखंड राज्य बेवरेज कारपोरेशन लिमिटेड के माध्यम से खुदरा उत्पाद दुकानों का संचालन नियमावली 2022 संवैधानिकता को भी चुनौती दी है। दरअसल, जेएसबीसीएल झारखंड में शराब का अकेला रिटेलर है। उसने अपने रिटेलर आउटलेट को मैनेज(मैन पावर के लिए) करने के लिए एक टेंडर निकाला था। इसमें उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को टेंडर में सफल घोषित करते हुए 10 जोन में से 2 जोन का मेन पावर देने के लिए प्लेसमेंट एजेंसी के रूप में चुना गया था। इसके बाद उर्मिला इंटरनेशनल ने खुद को मिले 2 जोन में शराब के रिटेल आउटलेट का सर्वे कराया। जिसमें उसने पाया कि उसे मिले दो जोन में कोई भी रिटेलर शराब का शॉप मिनिमम गारंटी रेवेन्यू (एमजीआर) का टारगेट नहीं प्राप्त कर सका है। इसके अलावा इन दोनों जोन में रिटेल आउटलेट के स्टाफ की बकाया सैलरी, रिटेल शॉप में कुछ डुप्लीकेट शराब मिलने जैसे मामले उसके सामने आए। उर्मिला इंटरनेशनल के समक्ष यह बात भी आई कि शराब की उक्त नियमावली 2022 के क्लॉज 15 के तहत अगर रिटेल शॉप एमजीआर प्राप्त नहीं कर सकते हैं तो जेएसबीसीएल उस प्लेसमेंट एजेंसी से वह राशि रिकवर करेगा। इन त्रुटियों के सामने के आने के बाद उर्मिला इंटरनेशनल ने जेएसबीसीएल को पत्र लिखते हुए कहा कि नियमावली में लचीला लाया जाए। जिसके बाद जेएसबीसीएल ने उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज को सो काज नोटिस करते हुए कहा कि वे उसे ब्लैक लिस्टेड कर देंगे।

सातवीं जेपीएससी मामले की सुनवाई, प्रार्थी को प्रत्युत्तर देने का निर्देश

- जेपीएससी ने हाईकोर्ट को बताया, जिस फॉर्मेट में देना था जाति प्रमाण पत्र उसमें नहीं दिया, प्रार्थी ने बताया- ऐसा ही मामला बड़े बेंच को है ट्रांसफर

RANCHI : सातवीं से दसवीं जेपीएससी परीक्षा में एसडीओ द्वारा निर्गत जाति प्रमाण पत्र होने के बावजूद चयनित नहीं किए जाने एवं आरक्षण का लाभ नहीं देने के मामले को लेकर कुमारी सुमित एवं रसिक जमुदा की याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। मामले में जीपीएससी की ओर से जवाब दाखिल किया गया। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि प्रार्थी ने विज्ञापन के मानकों का उल्लंघन किया है। जिस फॉर्मेट में जाति प्रमाण पत्र देना था उसमें इन अभ्यर्थियों द्वारा नहीं दिया गया। इसलिए उनके केस को निरस्त किया जाना चाहिए। वहीं, प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता शैलेश कुमार सिंह ने कोर्ट को बताया कि उन्हें एक दिन पूर्व जेपीएससी का शपथ पत्र मिला है। जिस कारण उन्हें समय दिया जाए। उन्होंने कोर्ट को बताया कि इसी तरह के मामले एलपीए संख्या 64 /2020 को हाईकोर्ट की खंडपीठ ने अपना आदेश सुनाते हुए 23 मार्च 2023 को इसे वृहत बीच में ट्रांसफर किया है। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डॉ एसएन पाठक की कोर्ट ने मामले में जेपीएससी के जवाब पर प्रार्थी को अपना प्रत्युत्तर देने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 3 सप्ताह के बाद निर्धारित की है। दरअसल, उक्त परीक्षा में अनुसूचित जनजाति कैंडिडेट कुमारी सुमित को 562 अंक एवं रसिक जमुना को 576 अंक आए थे। जबकि अनुसूचित जनजाति के लिए इस परीक्षा में कट ऑफ मार्क्स 555 था। जेपीएससी द्वारा साक्षात्कार में बुलाए जाने के बाद भी इनका सिलेक्शन नहीं किए जाने के बाद उन्होंने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की है। पूर्व की सुनवाई के दौरान प्रार्थी की ओर से कहा गया था की एसडीओ चक्रधरपुर ने जो सर्टिफिकेट निर्गत किया है वह सीओ के द्वारा निर्गत सर्टिफिकेट के बेसिस पर किया है। जाति प्रमाण पत्र का निरीक्षण कर सर्टिफिकेट की जांच के बाद जेपीएससी ने इन्हें इंटरव्यू में बैठने दिया था, इसलिए इनका सिलेक्शन किया जाना चाहिए था।

शराब बिक्री टेंडर गड़बड़ी मामला: प्रार्थी ने बताया केस उठाने के लिए विधायक की ओर से दी जा रही धमकी

RANCHI : शराब ब्रिकी टेंडर गड़बड़ी मामले में दायर उमेश कुमार के जनहित याचिका पर मंगलवार को झारखंड हाईकोर्ट ने की। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में चल रही है सुनवाई के दौरान प्रार्थी की अधिवक्ता राजीव कुमार की ओर से कोर्ट को बताया गया की इस केस को उठाने को लेकर प्रार्थी उमेश कुमार को विधायक अनूप सिंह की ओर से धमकी दी जा रही है। इस पर कोर्ट ने प्रार्थी को इस बात की जानकारी कोर्ट के रिकॉर्ड पर दो सप्ताह में पूरक शपथ के माध्यम से लाने का निर्देश दिया। वहीं कोर्ट ने राज्य सरकार को जवाब दाखिल कर बताने को कहा है कि प्रार्थी के अधिवक्ता विकल्प गुप्ता के खिलाफ कितने केस दर्ज हैं। प्रतिवादी राज्य सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता कपिल सिब्बल हाइब्रिड मोड में हाईकोर्ट से ऑनलाइन मोड से जुड़े। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने मामले में राज्य सरकार को प्रार्थी के अधिवक्ता को धमकाने और उसके भाई को पुलिस द्वारा उठाने मामले की वस्तुस्थिति कोर्ट को अवगत कराने का निर्देश दिया था। कोर्ट ने मामले में राज्य सरकार से पूछा था कि वह बताएं कि प्रार्थी को क्यों धमकाया गया एवं प्रार्थी के अधिवक्ता विकल्प गुप्ता जो इस केस में सहयोग कर रहे हैं उसके भाई को क्यों 43 घंटा तक हाजत में रखा गया।

क्या है पूरा मामला

पूर्व की सुनवाई के दौरान प्रार्थी के अधिवक्ता राजीव कुमार की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि राज्य के जिलों में शराब के होलसेल के टेंडर में शामिल होने के लिए 25 लाख रुपए नन रिफंडेबल राशि तय की गई थी। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया था कि राज्य के विभिन्न जिलों में शराब के होलसेल और रिटेल का टेंडर लेने के लिए कोलकाता से झारखंड के 3 जिलों में अलग-अलग खातों में करोड़ों रुपए भेजा गया था। यह उन कंपनियों के खाते में भेजा गया था जहां जिनके खाते में मात्र दो- चार हजार रुपए हुआ करता था। उसी खाते से सारा पैसा राज्य के अन्य जिलों में शराब के होलसेल के टेंडर के लिए 25 -25 लाख रुपया जमा करने में इस्तेमाल हुआ था। कोलकाता से भेजे गए पैसों का इस्तेमाल शराब माफिया की ओर से झारखंड के सभी जिलों में शराब के होलसेल का टेंडर लेने के लिए किया गया था। प्रार्थी ने इसकी जांच कराने का आग्रह कोर्ट से किया था।

विधानसभा में नमाज कक्ष का आवंटन किस आधार पर हुआ : हाईकोर्ट

RANCHI : झारखंड विधानसभा में नमाज कक्ष के रूप में एक रूम को नोटिफाइड किए जाने को चुनौती देने वाली अजय कुमार मोदी की जनहित याचिका पर मंगलवार को झारखंड हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। साथ ही मौखिक रूप से पूछा है कि यह व्यवस्था किस आधार पर की गई। मामले में झारखंड विधानसभा की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने कोर्ट को बताया कि देश के अलग-अलग राज्यों के विधानसभा से नमाज कक्ष को लेकर एक रिपोर्ट मंगाई गई है। उनकी रिपोर्ट के आधार पर कानूनी पक्ष को देखते हुए इस संबंध में बनी कमेटी अपना रिपोर्ट देगी। यह देखा जा रहा है कि देश के किन किन राज्यों के विधानसभा में नमाज कक्ष की व्यवस्था है। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले में झारखंड विधानसभा को स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश देते हुए मामले की सुनवाई 18 मई निर्धारित की है। पिछली सुनवाई में महाधिवक्ता राजीव रंजन की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि प्रार्थी के आग्रह को देखते हुए एक कमेटी बनाई गई है।

रतन हाइट्स मामले में बहस पूरी, अलगी सुनवाई 10 मई को

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट में मंगलवार को रतन हाईट्स बिल्डिंग सोसाइटी की याचिका पर सुनवाई हुई। मामले में याचिकाकर्ता की बहस पूरी हो गई। 10 मई को अब प्रतिवादियों की बहस होगी। मामले में कोर्ट के आदेश के आलोक में बिल्डर वीकेएस रियलिटी ने अंडरटेकिंग दिया। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा, रोहित रंजन सिन्हा और सुमित गड़ोदिया ने पक्ष रखा। रांची नगर निगम की ओर से शशांक शेखर ने पैरवी की।

BRIEF NEWS

बंगाल पुलिस ने दो शूटर को रांची से पकड़ा

RANCHI : बंगाल पुलिस ने राजू झा की हत्या मामले में इंद्रजीत गिरि और लालबाबू कुमार को रांची के पुंदाग ओपी से गिरफ्तार किया है। दोनों को पुलिस अपने साथ ले गयी। दोनों शूटर बताए जा रहे हैं। इंद्रजीत यूपी और लालबाबू बिहार का रहने वाला है। दोनों यहां छिपकर रह रहे थे। बताया गया कि आसनसोल-दुगार्पुर क्षेत्र के कोयला कारोबारी सह व्यवसायी और भाजपा नेता राजू झा उर्फ राजेश की बंगाल के बर्द्धमान जिले के शक्तिगढ़ में बीते एक अप्रैल की रात गोली मार दी गई थी। गोली लगने के बाद भाजपा नेता की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि राजू को पांच गोली लगी जबकि उसके एक साथी ब्रथिन मुखर्जी को गोली लगी थी। घटना के बाद, पुलिस मामले की जांच शुरू कर दी थी। जांच के क्रम में मोबाइल का लोकेशन पुंदाग में मिला। इसके बाद पुंदाग पुलिस की सहायता से दोनों को गिरफ्तार किया। ओपी प्रभारी ने मंगलवार को बताया कि दोनों को बंगाल पुलिस अपने साथ ले गई।

डेढ़ करोड़ की ठगी का आरोपी चुटिया से गिरफ्तार

RANCHI : हैदराबाद की पुलिस डेढ़ करोड़ की ठगी का आरोपी को रांची के चुटिया से गिरफ्तार किया है। चुटिया के गोंसाईं टोला निवासी समीर उर्फ बहादुर कुमार को पुलिस गिरफ्तार कर ट्रांजिट रिमांड पर हैदराबाद ले गयी। बताया जाता है कि मामला 2022 का है। समीर उर्फ बहादुर कुमार के अलावा इस गैंग में पांच आरोपित थे। उनमें कुछ आरोपितों को हैदराबाद पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। उनके निशानदेही पर पुलिस समीर को गिरफ्तार करने रांची पहुंची। एसएसपी किशोर कौशल को जानकारी देने के बाद हैदराबाद पुलिस चुटिया थाना पहुंची। समीर का लोकेशन चुटिया राममंदिर के पास मिल रहा था। चुटिया पुलिस के सहयोग से हैदराबाद पुलिस समीर के गोसाईं टोला स्थित घर से गिरफ्तार कर लिया।

जैप-10 के पुलिसकर्मियों ने 65 यूनिट किया रक्तदान

RANCHI : होटवार स्थित झारखंड सशस्त्र पुलिस (जैप-10) में मंगलवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान सदर अस्पताल के चिकित्सीय दल तथा अतुल गेरा के सहयोग से किया गया। रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में आईजी प्रशिक्षण प्रिया दूबे उपस्थित थीं। शिविर में कुल 65 यूनिट रक्त दान किया गया। रक्तदान के बाद सर्टिफिकेट का वितरण आईजी (प्रशिक्षण) की ओर से किया गया। मौके पर जैप-10 महिला वाहिनी के समादेष्टा धनंजय कुमार सिंह,तारामनी बाखला, सुमनगिनी नाग, हेलेन सोय, सुरेश सिंह सहित अन्य पुलिसकर्मियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

रांची-पटना वंदे भारत ट्रेन 10 मई से चलेगी , महज छह घंटे में तय होगी दूरी

RANCHI : रांची-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन 10 मई से चलेगी। रेलवे ने आठ कोच वाली रांची-पटना वंदे भारत ट्रेन हजारीबाग होते हुए चलाने की तैयारी की है। रांची-पटना जन शताबदी एक्सप्रेस जहां सात घंटे में दूरी तय करती है, वहीं रेलवे बोर्ड की कोशिश है कि वंदे भारत ट्रेन छह घंटे में दूरी तय करे। रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार अगर कोई तकनीकी समस्या नहीं आई तो 10 मई से इसे चलाने की तैयारी है।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

डीजीपी अजय कुमार सिंह ने अधिकारियों के साथ की बैठक

सभी जिलों में पुराने लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन करें : डीजीपी

पुलिस मुख्यालय में अधिकारियों के साथ बैठक करते झारखंड डीजीपी अजय कुमार सिंह ● फोटोन न्यूज

CRIME REPORTER RANCHI : डीजीपी अजय कुमार सिंह ने मंगलवार को पुलिस मुख्यालय में अधिकारियों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने कई निर्देश दिये। डीजीपी ने राज्य के सभी जिलों में पुराने सभी लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन करने, न्यायालयों, न्यायिक पदाधिकारियों के आवासीय परिसर की सुरक्षा व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त करने और कोयला चोरी पर प्रभावी रूप से रोक लगाने को कहा। डीजीपी ने मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक को संबोधित किया। उन्होंने सबसे पहले दक्षिणी छोटानागपुर क्षेत्र, रांची, सिमडेगा, गुमला, लोहरदगा और खूंटी जिला के एसएसपी/एसपी से जिला में लंबित काण्डों की समीक्षा की। डीजीपी ने रांची रेंज के सभी जिलों में पुराने सभी लंबित मामलों का त्वरित निष्पादन करने का निर्देश दिया। साथ ही नक्सल, हत्या, साईबर अपराध, मानव तस्करी, पॉक्सो एक्ट, वाहन चोरी, एनडीपीएस एक्ट और अनुसूचित जाति, जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज मामलों में तेजी लाने पर जोर दिया। डीजीपी ने राज्य के सभी जिलों में स्थित न्यायालय और न्यायिक पदाधिकारियों के आवासीय परिसर की सुरक्षा की समीक्षा की। उन्होंने पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। साथ ही राज्य के सभी एसएसपी और एसपी को जिला के न्यायालयों में अविलम्ब सीसीटीवी लगाने के लिए आवश्यक पहल करने का निर्देश दिया। इसके अलावा डीजीपी ने रांची, हजारीबाग, धनबाद, बोकारो, चतरा, रामगढ़ और लातेहार के जिलों में कोयला चोरी से संबंधित लंबित कांडों की भी समीक्षा की। इस क्रम में कोयला चोरी से संबंधित सभी काण्डों का त्वरित निष्पादन करने और कोयला चोरी रोकने के लिए टास्क फोर्स द्वारा लगातार कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। सीआईडी डीजी अनुराग गुप्ता ने रांची क्षेत्र के लंबित कांडों की स्थिति, कोयला चोरी से संबंधित लंबित कांडों की स्थिति और कोयला चोरी रोकने के लिए गठित टास्क फोर्स की ओर से की गयी कार्रवाई से संबंधित जानकारी दी। बैठक में एडीजी अभियान संजय आनन्द राव लाठकर, आईजी अभियान एवी होमकर, सीआईडी आईजी असीम विक्रांत मिंज, डीआईजी अनूप बिरथरे, सीआईजी डीआईजी एम तमिल वानन, सीआईडी एसपी कार्तिक एस और एसएसपी रांची किशोर कौशल सहित अन्य मौजूद थे।

मेगा ट्रेड फेयर में थाईलैंड की कुर्ती और डिजाइनर सूट की जबरदस्त मांग

मोरहाबादी मैदान में मेगा ट्रेड फेयर में खरीदारी करते लोग ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : रांची के मोरहाबादी मैदान में लगे इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर के चौथे दिन मंगलवार को काफी भीड़ देखी गयी। लोग अपने परिवार और दोस्तों संग मेगा ट्रेड में खरीदारी के साथ मनोरंजन भी कर रहे हैं। झारखंड चैंबर और जीएस मार्केटिंग एसोसिएट्स के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस ट्रेड फेयर में ऑफरों के बीच मंगलवार को भी खरीदारी का सिलसिला चला। दोपहर के बाद लोगों का आना शुरू हो गया था। लोगों की अधिकतर भीड़ इंटरनेशनल हैंगर में दिख रही है। यहां अफगानिस्तान, ईरान, बांग्लादेश, दुबई, सिंगापुर, थाइलैंड आदि के स्टॉल लगे हैं। अफगानिस्तान के स्टाल पर ड्राइ फ्रूट की कई वैराइटी लोगों को पसंद आ रहा है जबकि थाइलैंड की कुर्ती भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। थाइलैंड की कुर्ती एक हजार रुपये में मिल रही है। डिजाइन सूट की कीमत भी एक हजार रुपये है। ट्रेड फेयर में सेलो कंपनी के भी स्टॉल लगाये हैं। जहां कंपनी के सभी उत्पादों पर 40 प्रतिशत तक की छूट दी जा रही है।

सरयू राय ने की राज्यपाल से स्वास्थ्य मंत्री के अश्लील वीडियो मामले में कार्रवाई की मांग

राज्यपाल से मुलाकात कर बातचीत करते सरयू राय ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : विधायक सरयू राय ने मंगलवार को राजभवन में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात की। राज्यपाल से मुलाकात कर राय ने बताया कि 23 अप्रैल को बन्ना गुप्ता के कथित अश्लील वीडियो चैट वायरल हुआ था। इसके अलावा मंत्री पर आर्म्स एक्ट का उल्लंघन कर अवैध पिस्टल रखने का भी आरोप लगा है। इन दोनों मामलों को लेकर उन्होंने पुलिस-प्रशासन और सरकार से कई बार मंत्री पर कार्रवाई करने की अपील की। लेकिन राजनीतिक दबाव के कारण बन्ना गुप्ता पर पुलिस-प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की। सरयू राय ने आरोप लगाया कि बन्ना गुप्ता को सरकार का संरक्षण प्राप्त है, इसलिए कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होने राज्यपाल से अनुरोध किया कि मामले में कार्रवाई करें। विधायक ने बताया राजनीतिक दबाव के कारण सारे प्रमाण रहने के बाद भी मंत्री के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हो रही है। इससे स्पष्ट है कि राज्य में कानून का शासन नहीं रह गया है और यदि नियम-कानून का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति सरकार मंत्री है और एक राष्ट्रीय पार्टी से जुड़ा हुआ है तो उसके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद दीपक प्रकाश ने सांसद कोष से निर्मित पीसीसी पथ का किया उद्घाटन, बोले

अंत्योदय के सपने को साकार करना भाजपा का लक्ष्य

निर्मित पीसीसी पथ का उद्घाटन करते दीपक प्रकाश ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद दीपक प्रकाश ने मंगलवार को बुडमू प्रखण्ड अंतर्गत आदिवासी बाल विकास विद्यालय, ठाकुरगांव में सांसद कोष से निर्मित पीसीसी पथ का उद्घाटन किया एवं निशुल्क कोर कार्बन लकड़ी चूल्हा (धुवां रहित) का वितरण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा को जब जब अवसर मिला तब तब सड़कों का जाल बिछाया गया। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का सड़क नेटवर्क दुनिया में दूसरे स्थान पर पहुंच गया। पिछले आठ वर्षों के कार्यकाल में केंद्र सरकार ने लगभग चार लाख किलो मीटर सड़क निर्माण की मंजूरी दी है। उन्होंने कहा कि किसी भी देश कि अर्थव्यवस्था उसके परिवहन मार्ग पर विशेष कर निर्भर करता है। मोदी जी के नेतृत्व में लगातार सड़क, जल और वायु परिवहन पर कार्य हो रहा है। इससे गरीबी में कमी आयी है। देश में प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हुई है। भारत का आत्मविश्वास बढ़ा है, भारत आत्मनिर्भरता की राह पर तेजी से अग्रसर हुआ है।

प्रकाश ने निशुल्क कोर कार्बन लकड़ी चूल्हा (धुवां रहित) का वितरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में उज्ज्वला योजना के मार्फत देश की नौ करोड़ महिलाओं को चूल्हे के धुवें से मुक्ति मिली है। इससे उनका स्वास्थ्य भी सुधरा है और जीवन स्तर भी। उन्होंने कहा कि बुड़मू के लोगों की लंबे से समय से सड़क की माँग को ध्यान में रखते हुए सड़क का निर्माण कराया गया। यह सड़क लोगों के जीवन में कई बदलाव लायेगा। उन्होंने कहा कि अंतिम व्यक्ति के सपने को साकार करना ही भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य है। इससे पूर्व कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक नृत्य करते हुए स्वागत किया गया।

भाजपा के गुमला जिला कार्यालय का शिलान्यास

गुमला जिला कार्यालय का शिलान्यास मंगलवार को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद दीपक प्रकाश ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संगठन शास्त्र में कार्यालय, कार्यकर्ता, कोष का सबसे बड़ा महत्व है। यह कार्यालय सभी कार्यकताओं के लिए अमूल्य संपत्ति के रूप में समर्पित है, जो ईश्वर का स्थल है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यह कार्यालय आधुनिक टेक्नोलॉजी से सुसज्जित होगा और राष्ट्र सेवा का केंद्र बिंदु बनेगा। उन्होंने कहा कि जनसंघ काल से लेकर संयुक्त बिहार में अगर कहीं भाजपा का जनाधार था तो वह गुमला जिला ही है। स्वर्गीय रोपना उरांव को पूरा बिहार जानता था। आज के कार्यक्रम के माध्यम से मैं सभी दिवंगत-समर्पित जनों को नमन करता हूं, श्रद्धांजलि देता हूं। साथ ही कहा कि हम सभी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सहारे गुमला के पवित्र भूमि से लोकसभा तो जीतेंगे ही विधानसभा सूद समेत जीतेंगे।

BRIEF NEWS

आईआईएम रांची के 80 छात्र-छात्रा पहुंचे विकास भारती बिशुनपुर, गुमला

GUMLA : देश के ख्यातिलब्ध प्रबंधन संस्थान, आईआईएम, रांची, के एम. बी. ए. के 80 छात्र-छात्राओं का एक दल विकास भारती बिशुनपुर के मुख्यालय बिशुनपुर, गुमला पहुंचे। ऐसा पहली बार हुआ है कि इतने उच्च कोटि के शिक्षण संस्थान के छात्रों का समूह किसी गैर सरकारी संस्था में अपने इंटर्नशिप के क्रम में पहुंचे है। छात्रों के इस दल का यह तीन दिवसीय (2 से 4 मई 2023) आवासीय प्रवास होगा जिसके दौरान ये छात्र-छात्रायें संस्था द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं एवं क्रियान्वित किये जा रहे विविध विकासात्मक कार्यों का सूक्ष्मता से अवलोकन कर इसे अपने अध्ययन का हिस्सा बनायेंगे। यह जानकारी विकास भारती के मीडिया प्रभाग द्वारा दी गई।

महिला की हत्या के चार आरोपित गिरफ्तार, पिस्टल बरामद

KHUNTI : जिले के उग्रवाद प्रभावित अड़की थाना क्षेत्र के सोनपुर गांव के कदमडीह टोला में 30 अप्रैल की देर रात सुकरू देवी की घर में ही गोली मारकर की गई हत्या के मामले में पुलिस ने सभी चार आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपितों में मारंगहादा थाना क्षेत्र के पीड़ीहातु गांव निवासी पंकज मुंडा और सनिका मुंडा, जोजोहातू गांव के पांडू मुंडा और मृतका सुकरू देवी का भतीजा उसी गांव का महादेव मुंडा शामिल हैं। गिरफ्तार आरोपितों के पास से पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त एक देसी पिस्टल, एक गोली, एक अपाची बाइक और तीन मोबाइल बरामद किये हैं। यह जानकारी खूंटी के एसडीपीओ अमतिक कुमार ने मंगलवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी।

मिनी ट्रक और बाइक की सीधी टक्कर, एक की मौत, दूसरा घायल

LATEHAR : जिले के चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत नवाड़ी गांव के पास बाइक और मिनी ट्रक की टक्कर हो गई। इस घटना में बाइक पर सवार एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। उसकी स्थिति भी नाजुक बनी हुई है। बताया जाता है कि सोमवार की रात सड़क लटदाग गांव के रहने वाले दो युवक एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। इसी दौरान एक मिनी ट्रक से बाइक की सीधी टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक सवार युवक बिजेंदर गंझु की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि उसके साथी युवक अशोक गंझु को गंभीर चोट आई है। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दी, जिसके बाद एंबुलेंस के माध्यम से घायल को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए प्राथमिक इलाज के बाद रेफर कर दिया गया। मंगलवार को शव को पोस्टमार्टम के लिए लातेहार सदर अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस घटना की तहकीकात कर रही है।

ट्रक पर लदा 870 किलो अवैध अफीम डोडा बरामद, दो गिरफ्तार

KHUNTI : पुलिस ने खूंटी थानांतर्गत बरबंदा गांव के जंगल में सोमवार सुबह छापामारी कर एक एलपीटी 709 ट्रक पर लदे 44 बोरा में भरे 870 किलो अवैध अफीम डोडा बरामद किया। मौके पर पुलिस ने ट्रक के चालक सहित दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि दो अन्य लोग जंगल का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे। गिरफ्तार समस्तीपुर बिहार के सिंघिया थाना क्षेत्र निवासी दिलखुश दास (31) और रांची के मांडर थानांतर्गत सोसई गांव के शुभम कुमार गुप्ता के विरुद्ध खूंटी थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर न्यायिक हिरासत में दोनों को जेल भेज दिया गया। एसडीपीओ अमित कुमार ने मंगलवार को आयोजित प्रेसा कॉन्फ्रेंस में बताया कि जब्त ट्रक को बाहर से मंगा कर तस्कर अफीम डोडा को पश्चिम बंगाल ले जाने वाले थे, लेकिन उससे पूर्व ही वे पकड़ लिए गए।

एक लाख का इनामी PLFI उग्रवादी सुखराम गुड़िया गिरफ्तार, हथियार व नकदी समेत अन्य सामान बरामद

PHOTON NEWS KHUNTI

प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के सब जोनल कमांडर एक लाख के इनामी सुखराम गुड़िया उर्फ रोड़े को रविवार की देर शाम जिला के तपकरा थाना क्षेत्र से पुलिस ने गिरफ्तार कर बड़ी सफलता अर्जित की। एके 47 राइफल, मैगजीन 24, जिंदा गोली 16, मोबाइल फोन, एक लाख 73 हजार 700 रुपये की नकदी सहित पीएलएफआई की चंदा रसीद सहित अन्य सामान बरामद हुआ है।

एसपी अमन कुमार ने सोमवार को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि पकड़े गए कुख्यात जोनल कमांडर की निशानदेही पर चाईबासा जिले के गुदरी थानांतर्गत जंगली क्षेत्र के तेनतारी पहाड़ और बंदगांव थानांतर्गत सोगा में चाईबासा जिला बल एवं सीआरपीएफ के साथ खूंटी पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाया गया।

अभियान में पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप का निजी विदेशी हथियार जर्मन राइफल एचके 33 व मैगजीन, 315 बोर का दो देसी राइफल एवं मैगजीन, एक देसी पिस्टल, 245 जिंदा गोली, एक दूरबीन दो चितकबरा पाउच सहित अन्य सामान बरामद किया है।

एसपी ने बताया कि रविवार को यह सूचना मिली कि सुखराम गुड़िया अपने दस्ते के साथ तपकरा थाना क्षेत्र में चल रहे विकास कार्य स्थल पर लेवी वसूलने के उद्देश्य से मुंशी के साथ मारपीट कर उसे धमकाया है। तपकारा क्षेत्र में उसके भ्रमणशील रहने की जानकारी मिलते ही एएसपी अभियान रमेश कुमार के नेतृत्व में एक छापामार टीम का गठन कर आवश्यक कार्रवाई का निर्देश दिया।

छापामार टीम त्वरित कार्रवाई करते हुए तुरंत मौके पर पहुंची, पुलिस को देखते ही नक्सली दस्ता भागने लगे इस पर मोटरसाइकिल में भाग रहे सुखराम गुड़िया को पुलिस ने पीछा कर हथियार सहित धर दबोचा एसपी ने बताया कि खूंटी, चाईबासा एवं गुमला जिला में लेवी वसूलने संगठन में नए सदस्यों की भर्ती करने सहित संगठन के अन्य प्रमुख कामों की जिम्मेदारी संभाल रहे सुखराम गुड़िया की गिरफ्तारी और उसकी निशानदेही पर सुप्रीमो दिनेश गोप का निजी हथियार सहित बड़ी मात्रा में गोलियां और अन्य हथियारों की बरामदगी से पीएलएफआई संगठन को जोरदार झटका लगा है। कुछ वर्ष पूर्व पुलिस मुठभेड़ में कुख्यात जीदन गुड़िया और लाका पहान के मारे जाने के बाद संगठन में सुप्रीमो के बाद सुखराम ही संगठन का प्रमुख कमांडर था जो संगठन की जिम्मेदारी संभाल रहा था।

बताया गया कि सुखराम के विरोध जिला के तोरपा तपकरा मुरहू एवं चाईबासा के बंदगांव, आनंदपुर और गुदरी थाना में हत्या आर्म्स एक्ट, 17 सेक्टर सीएलए एक्ट विस्फोटक अधिनियम आदि संगीन धाराओं में 27 मामले दर्ज हैं।

गिरफ्तार अपराधी व जानकारी देती पुलिस। ● द फोटोन न्यूज

गिरफ्तार उग्रवादी की निशानदेही पर भारी मात्रा में हथियार व कारतूस बरामद

CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिला सुरक्षा बल को बड़ी कामयाबी मिली है सोमवार को सुरक्षाबलों ने भारी मात्रा में हथियार बरामद किया है इस संबंध में जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर ने कहा कि 30 अप्रैल की रात्रि में खूटी जिलान्तर्गत प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के एरिया कमांडर सुखराम गुड़िया उर्फ रोडे उर्फ भदवा उर्फ भीम उम्र लगभग 25 वर्ष, ग्राम तपकरा जोजो टोली, थाना तपकरा जिला खूटी की गिरफ्तारी हुई। गिरफ्तारी के उपरांत उसके द्वारा अपने स्वीकारोक्ति बयान में बताया गया कि चाईबासा जिलान्तर्गत गुदड़ी थाना एवं बंदगांव व थाना क्षेत्र में पीएलएफआई उग्रवादियों द्वारा उपयोग किये जा रहे हथियारों को छुपाकर रखा गया है। जिसके संबंध में त्वरित कार्रवाई करते हुए चाईबासा जिलाबल, खूंटी जिलाबल एवं सीआरपीएफ 94 बटालियन का एक संयुक्त अभियान दल गठित किया गया। संयुक्त अभियान दल द्वारा रात्रि में छापामारी में अभियान संचालित किया गया और अभियान संचालन के क्रम में गुदड़ी थानान्तर्गत तेनतारी पहाड़ , जंगली क्षेत्र से एक एचके 33 राइफल मैगजीन, 245 जिन्दा गोली, 2 चितकवरा पाउच, एक देशी पिस्टल, एक दूरबीन बरामद किया गया। इसके अलावा बंदगांव थानान्तर्गत ग्राम सोगा से दो 315 बोर का देशी राईफल एवं मैगजीन तथा अन्य सामान बरामद किया गया। उक्त एरिया कमांडर के विरुद्ध चाईबासा जिला एवं खूंटी जिलान्तर्गत कुल 27 कांड अंकित है।

बरामद हथियार। ● द फोटोन न्यूज

अभियान दल में सीआरपीएफ 94 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी, पीआर मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) खूंटी रमेश कुमार, भापुसे सहायक पुलिस अधीक्षक-सह-अनु.पु.पदाधिकारी, चक्रधरपुर कपिल चौधरी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, तोरपा ओम प्रकाश तिवारी, पुनि दिगविजय सिंह, तोरपा अंचल, चाईबासा जिलाबल, खूंटी जिलाबल एवं सीआरपीएफ 94 बटालियन के जवान शामिल थे।

अवैध विस्फोटक से तालाब खोदने के मामले में झामुमो नेता सहित दो गिरफ्तार

PHOTON NEWS GIRIDIH

पचंबा थाना पुलिस ने झामुमो नेता सह पूर्व मुखिया अर्जुन रवानी समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया है। दोनों पर अवैध विस्फोटक पदार्थ से सरकारी तालाब खोदने का आरोप है।

बताया जाता है कि जिस स्थान पर तालाब बनाने के लिए गड्ढा किया जा रहा था, वहां से न्यू समाहरणालय भवन तक की दूरी महज एक किमी है। सोमवार को झामुमो नेता के साथ विस्फोटक के आपूर्तिकर्ता मो. शमशेर ने जब विस्फोट किया तो करीब आधा किमी का इलाका तेज आवाज से थर्रा उठा। किसी अनहोनी की आशंका से बाहर निकले ग्रामीण को जब सच्चाई पता चली और ग्रामीणों ने इसका विरोध किया तो पूर्व मुखिया के समर्थकों ने ग्रामीणों संग मारपीट की। पुलिस इन समर्थकों की तलाश में जुट गई है।

मामले की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पचंबा पुलिस ने करहरबारी के झामुमो नेता अर्जुन रवानी और उसके साथी मुकेश राय को हिरासत में ले लिया। वहीं, मुकेश राय के साथ झामुमो नेता के बेटे आदर्श रवानी, बबलू रवानी और अनूप रवानी पर ग्रामीणों के साथ मारपीट का आरोप है जिसमें बबलू, अनूप और झामुमो नेता का बेटा आदर्श समेत झामुमो नेता को विस्फोटक पदार्थ की आपूर्ति करने वाला अब भी फरार है। इसकी पुष्टि डीएसपी संजय राणा ने की है।

झामुमो नेता को गिरफ्तार कर ले जाती पुलिस। ● द फोटोन न्यूज

LATEHAR में उग्रवादी संगठन TSPC का सब जोनल कमांडर सत्येंद्र यादव गिरफ्तार

PHOTON NEWS LATEHAR

पुलिस की टीम ने जिले के मनिका थाना क्षेत्र अंतर्गत राकीकला गांव के पास छापामारी कर उग्रवादी संगठन टीएसपीसी के सब जोनल कमांडर सत्येंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार उग्रवादी सत्येंद्र यादव जिले के छिपादोहर का रहने वाला है।

इस संबंध में मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए पुलिस इंस्पेक्टर बबलू कुमार ने बताया कि लातेहार एसपी अंजनी अंजन को गुप्त सूचना मिली थी कि टीएसपीसी का सब जोनल कमांडर सत्येंद्र यादव किसी घटना को अंजाम देने के लिए मनिका थाना क्षेत्र के राकीकला गांव के पास जमा हुआ है। इस सूचना के बाद एसपी के निर्देश पर पुलिस की एक टीम गठित की गई और उग्रवादियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी की गई। छापामारी के क्रम में पुलिस ने सत्येंद्र को गिरफ्तार कर लिया।

पूछताछ के दौरान गिरफ्तार उग्रवादी की पहचान टीएसपीसी के सब जोनल कमांडर सत्येंद्र यादव के रूप में हुई। बाद में पूछताछ के दौरान गिरफ्तार उग्रवादी ने पुलिस को बताया कि गत दिनों मनिका थाना क्षेत्र में सड़क निर्माण कार्य में लगे वाहन को आग लगाने की घटना में वह मुख्य रूप से शामिल था। इसके अलावा पुलिस के साथ मुठभेड़ में भी वह शामिल था। पुलिस इंस्पेक्टर ने बताया कि सत्येंद्र यादव की तलाश काफी दिनों से पुलिस को थी यह मुख्य रूप से लेवी वसूलने तथा क्षेत्र में भय बनाने के लिए हिंसक वारदातों को अंजाम देने का काम करता था। पूछताछ के क्रम में पुलिस को गिरफ्तार उग्रवादी ने कई महत्वपूर्ण जानकारी दी है। इसके आधार पर आगे की कार्रवाई की योजना बन रही है।

गिरफ्तार अपराधी व जानकारी देती पुलिस। ● द फोटोन न्यूज

माइका पाउडर से लोड ट्रक को वन विभाग ने किया जब्त

माइका पाउडर लदा ट्रक। ● द फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS GIRIDIH

गिरिडीह वन विभाग की टीम ने मंगलवार को नगर थाना क्षेत्र के बरगंडा चौक में छापेमारी कर माइका पावडर लोडेड एक ट्रक को जब्त किया है। ट्रक में भारी मात्रा में माइका का पाउडर लोड था। टीम ने ट्रक को जब्त कर वन विभाग कार्यालय भेजा। बताया गया कि ट्रक में करीब 100 से अधिक बोरी में माइका का पाउडर भरा है।

माइका कारोबारी गैर पावडर बनाकर को तस्करी के लिए गिरिडीह स्थित माइका फैक्ट्रियों में भेजते हैं। सूचना पर डीएफओ ने छापेमारी कर वाहन को जब्त किया है। बताया गया कि माइका के पाउडर की कीमत लाखों रुपये है।

रांची यूनिवर्सिटी के 36वें दीक्षांत समारोह में 2859 छात्र-छात्राओं को मिली उपाधि

PHOTON NEWS RANCHI

कुलाधिपति सह राज्यपाल ने कहा, राष्ट्र का सम्मान विश्व की नजर में बढ़ा है तो इसका कारण हमारी शिक्षा, हमारे संस्कार और देश की अपनी शिक्षा की बदौलत हम वैश्विक गुरू बनने की ओर अग्रसर हैं। राष्ट्र का सम्मान विश्व की नजर में बढ़ा है तो इसका कारण हमारी शिक्षा, हमारे संस्कार और देश की युवा शक्ति हैं। हमें अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करना चाहिए।

अपनी क्षेत्रीय एवं मातृभाषा को जानने के साथ ही अंग्रेजी को भी सीखना आवश्यक है। ताकि हम सारे विश्व के बारे में जान सकें। जितनी समृद्ध हमारी शिक्षा है, जैसे परिश्रमी हमारे युवा है, जैसी ज्ञान और शोध की हमारी शक्ति है उससे मैं आश्वस्त हूं कि हम जल्द ही विश्वगुरू बनेंगे।

उक्त बातें राज्यपाल सह कुलाधिपति सीपी राधाकृष्णन ने रांची यूनिवर्सिटी के 36वें दीक्षांत समारोह के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने अपने संबोधन में छात्रों, कुलपति प्रोफेसर डा अजीत कुमार सिन्हा एवं आरयू के सभी पदाधिकारियों व कर्मियों को शुभकामनाएं दी। राज्यपाल ने समारोह में 65 टापरों को गोल्ड मेडल प्रदान किए। साथ ही 2859 छात्रों को भी उपाधि प्रदान की गई। इसमें पीजी विभागों के टापर, पीएचडी तथा अपने विषयों के टापर छात्रों को कुलाधिपति ने स्वयं गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया। दीक्षांत समारोह में छात्रों ने पारंपरिक परिधान कुर्ता पायजामा या धोती वहीं छात्राओं ने सलवार कुर्ता या झारखंड की पहचान लाल पाढ़ साड़ी में अपनी डिग्री को प्राप्त किया।

छात्रा को प्रमाण-पत्र देते राज्यपाल। ● द फोटोन न्यूज

कोयला लदे हाइवा की चपेट में आने से किशोर की मौत

PHOTON NEWS DUMKA

मुफस्सिल थाना क्षेत्र के दुमका-पाकुड़ मुख्य पथ पर हेठ कोरिया गांव के समीप सोमवार को कोयला लदे हाईवे की चपेट में आने से बाइक सवार उलीन मरांडी की मौत हो गई। हादसे से नाराज लोगों ने दस लाख रुपए की मांग करते हुए दुमका पाकुड़ मुख्य मार्ग को जाम कर दिया। ग्रामीणों के विरोध के कारण पुलिस को काफी मशक्कत के बाद शव को कब्जे में लेने में सफलता मिली।

जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के मकरो गांव निवासी उलीन मरांडी (16) सुबह किसी काम से हेठ कोरैया आया था। वापस जाने के क्रम में अमड़ापाड़ा की ओर से कोयला लेकर आ रहे हाईवा ने बाइक में सीधी टक्कर मार दी, जिससे किशोर की मौके पर ही मौत हो गई।

हादसे के बाद चालक हाईवा छोड़कर भाग गया। घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने मार्ग को जाम कर दिया।

पलामू में 103 बोरा पोस्ता भूसी बरामद

PALAMU : सदर थाना क्षेत्र के चियांकी से सोमवार को एक ट्रक में लोड 103 बोरा पोस्ता भूसी को पुलिस ने जब्त किया है। सदर थाना प्रभारी गौतम कुमार के अनुसार जब्त भूसी का वजन कुल 1600 किलोग्राम पोस्ता का है। पुलिस ने बताया की 80 बोरा चावल मुरी कर पैकेट भी जब्त किया गया है।

Medininagar महापौर अरुणा शंकर ने की पिंक बस सेवा की शुरूआत

पांच रुपये का पहला टिकट कटाकर चारों रूट में कराया बस का परिचालन प्रारंभ

PHOTON NEWS PALAMU

प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने मंगलवार को सभी महिला पार्षद कमर यासमीन, अहिल्या गुप्ता, हसबुन निशा, चंचला देवी प्रमिला देवी के साथ स्वयं पांच रुपये किराया का पहला टिकट काटकर चारों रूट रांची रोड, सिगरा रोड, चैनपुर शाहपुर रोड एवं पाकी मेडिकल कॉलेज रोड पर बस का परिचालन शुरू करा दिया।

प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने कहा कि बुधवार से यह पिंक बस सुबह 7:00 बजे से रांची रोड हेरिटेज स्कूल, पाकी रोड मेडिकल कॉलेज, चैनपुर भटी मोड तथा सिगरा पाटन मोड़ से प्रारंभ होकर शहर को आएगी और अंतिम ट्रिप शाम को 7:00 बजे डॉ राजेंद्र प्रसाद चौक से जाएगी। उन्होंने कहा कि चुकी यह बस महिलाओं और छात्राओं के लिए चलाई जा रही है इसीलिए कॉलेज एवं कोचिंग क्लासेस के टाइमिंग को ध्यान में रखकर चलाया जा रहा है, ताकि ज्यादा से ज्यादा छात्राओं को सुविधा मिल सके।

निगम क्षेत्र के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए मात्र पांच रुपये टिकट रखने से बस संचालक को प्रति बस 50 हजार तक का माहवारी नुकसान होगा। इसकी भरपाई छात्राओं और महिलाओं को होने वाली बचत की मुस्कान से होगी।

मौके पर महिला कंडक्टर इलेक्ट्रॉनिक टिकट मशीन लेकर तैयार थी। साथी खलासी और ड्राइवर भी पिंक टीशर्ट पहने नजर आए। एक दो दिनों के अंदर जीपीएस लिंक भी जारी कर दिया जाएगा ताकि हर महिला देख सके उनके रूट का बस उन तक कितने देर में पहुंचेगा। आज बस में सफर करने वाली महिलाओं को टिकट के साथ टॉफी दे कर मुंह मीठा भी कराया गया। सुरक्षा के दृष्टिकोण से सीसीटीवी भी सभी बसों में लगी है। सभी बसों में मोबाइल चार्जर भी लगा है।

बस में टिकट लेती महापौर। ● द फोटोन न्यूज

नाबालिग से शादी रचाने आए कोडरमा, पहुंचे जेल

PHOTON NEWS KODARMA

आए थे शादी रचाने और पहुंच गए जेल। ऐसा मामला मरकच्चो के जामू में हुआ जहां 15 वर्षीय नाबालिग लडकी से शादी रचाने के मामले में दूल्हा, पंडित, 5 महिलाओं और वर-वधू के पिता को मंगलवार को जेल भेज दिया गया।

मरकच्चो पुलिस ने सोमवार को दुल्हा राजू यादव समेत शादी कराने वाले गिरोह को गिरफ्तार किया था। इनमें दूल्हा पक्ष से सात लोगों को तथा वधू पक्ष के पिता दिलीप साव व शादी कराने आए पंडित बिक्रम पांडेय को मंगलवार को कोडरमा जेल भेज दिया। बताया गया कि दूल्हा राजू यादव (39), साकिन पालम बिहार गुडगांव, हरियाणा का निवासी है। शादी रचाने हरियाणा गुडगांव निवासी रेखा देवी (38), रूबी कुमारी (20), सुमित साव (18), बिनीता कुमारी (21), अजय साव (25) सभी साकीन चौमा थाना पालम बिहार जिला गुड़गांव हरियाणा निवासी भी आये थे।

जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी कोडरमा नरेंद्र कुमार सिंह ने मरकच्चो थाना में इन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। इस संबंध में बीडीओ पप्पू रज्जक व थाना प्रभारी लव कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि यह मामला बाल तस्करी से जुड़ा है। राजू यादव दिखावे के लिए नाबालिग से 2 मई को शादी करने वाला था लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य तस्करी कर उसे अपने साथ ले जाना था। यह शादी ग्रामीणों को बरगालाने के लिए रची गई थी।

पटना का गेस्ट हाउस बना जिस्मफरोशी का अड्डा, 4 लड़कियों समेत 6 को पुलिस ने पकड़ा

PHOTON REPORTER PATNA : राजधानी पटना में पुलिस ने देह व्यापार के धंधे का पदार्फाश किया है। यहां शास्त्रीनगर थाना क्षेत्र में राजा बाजार पिलर नंबर- 73 के पास एक गेस्ट हाउस में ये घिनौना काम किया जा रहा था।

गेस्ट हाउस से पुलिस ने इस धंधे में लिप्त दो युवकों को गिरफ्तार किया है। मौके पर

आपत्तिजनक चीजें बरामद

दिल्ली, पश्चिम बंगाल और बिहारशरीफ से आई चार युवतियों को भी पुलिस ने हिरासत में लिया है। पकड़े गए दोनों आरोपी गेस्ट हाउस के केयरटेकर बताए जा रहे हैं। युवतियों को बुलाने वाले की पुलिस तलाश कर रही है।

पुलिस को मिली थी सूचना : पुलिस के अनुसार एक्ट्रो नाम के गेस्ट हाउस में संदिग्ध लोगों के आवागमन की सूचना पर रेकी की गई। पुलिस को पता चला कि यहां युवतियों को भी बुलाया जाता है। सूचना पुख्ता होने के बाद रविवार को पुलिस ने गेस्ट हाउस के सभी कमरों की तलाशी ली। तलाशी में पुलिस को आपत्तिजनक सामान मिले।

इवेंट के नाम पर बुलाई जाती थी लड़कियां : तलाशी के दौरान गेस्ट हाउस के दोनों केयरटेकर ने भागने की कोशिश लेकिन पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को कमरे की तलाशी के दौरान चार युवतियां मिली। पूछताछ में युवतियों ने बताया कि, उन्हें पटना में इवेंट के नाम पर बुलाया जाता था, लेकिन जबरन उन्हें गेस्ट हाउस में भेज दिया जाता था।

जिस युवक के जरिए वो गेस्ट हाउस तक पहुंचाई गई थीं उसकी जानकारी और मोबाइल नंबर पुलिस ने हासिल कर लिया है। हालांकि वो अभी पुलिस की पकड़ से दूर है।

वॉट्स ऐप ग्रुप में भेजते थे तस्वीरें : हिरासत में पूछताछ के दौरान एक युवती ने पुलिस को बताया कि देह व्यापार के लिए संचालक ने वॉट्स ऐप पर ग्रुप बना रखा था। फोन पर ही युवतियों की तस्वीरें मंगाई जाती थीं और फिर उसे ग्राहकों को भेजा जाता था। इसके बाद पश्चिम बंगाल और दिल्ली से युवतियों को तय ठिकानों पर भेजा जाता था।

कुख्यात नक्सली प्रमोद मिश्रा और जगदीश मास्टर के घर NIA का छापा

REPORTER AURNGABAD : भाकपा माओवादी के कुख्यात नक्सली प्रमोद मिश्रा और जगदीश मास्टर व उनके रिश्तेदारों के घर मंगलवार को एनआईए (ठक्श्र) की टीम ने छापेमारी की। एनआईए की कार्रवाई करीब पांच घंटों तक चली।

छत्तीसगढ़ तक दिखा एक्शन

रिश्तेदारों के घर छापेमारी : एनआईए की टीम सुबह होते ही स्थानीय पुलिस के साथ दोनों नक्सलियों के घर पहुंची और छापेमारी शुरू की। नक्सली प्रमोद मिश्रा के घर कासमा, जगदीश मास्टर के कासमा और गम्हरिया एवं प्रमोद मिश्रा की दो बेटियों जिसमें बड़ी बेटी के घर रफीगंज और दूसरी बेटी के घर फेसर थाना क्षेत्र के बसडीहा गांव और छत्तीसगढ़ के रायपुर के शोभ में छापेमारी की गई।

नहीं मिला कुछ खास : टीम ने घर के बक्से, अटैची, आलमारी सहित अन्य सामानों को सर्च किया। जानकारी के अनुसार करीब पांच घंटे तक चली छापेमारी में एनआईए की टीम को कुछ विशेष नहीं मिला। छापेमारी के दौरान रिश्तेदारों के मोबाइल को भी जब्त किया गया है। कार्रवाई खत्म होने के बाद रिश्तेदारों को 25 मई को रांची के एनआईए कार्यालय में बुलाया गया है।

रिश्तेदार होने का भुगत रहे खामियाजा- दामाद : एनआईए की टीम ने दोनों रिश्तेदारों से पूछताछ में फरार नक्सली प्रमोद मिश्रा के ठिकानों के बारे में पूछा। रिश्तेदारों ने टीम को बताया कि उन्हें कुछ भी मालूम नहीं है कि वो कहा है। नक्सली घर से जबसे फरार हुआ है तबसे उनका उससे कोई संपर्क नहीं हुआ है। रिश्तेदारों ने कहा कि प्रमोद करीब नौ वर्ष तक जेल में रहने के बाद छूटा था और चार वर्ष पहले घर से निकला था तभी से उससे कोई संपर्क नहीं है।

प्रमोद मिश्रा के दोनों दामादों ने एनआईए की टीम को बताया कि वे प्रमोद मिश्रा के रिश्तेदार होने का खामियाजा भुगत रहे हैं। घर की स्थिति को दिखाते हुए कहा कि प्रमोद से शादी के बाद से कोई संबंध नहीं है। रिश्तेदारों ने बताया कि साल 2022 के फरवरी माह में भी एनआईए की टीम ने प्रमोद मिश्रा के घर पर छापेमारी की थी, तब भी कुछ नहीं मिला था। कुछ किताबें एनआईए ने बरामद की थी जिसे नक्सली साहित्य के नाम पर जब्त किया था। ईडी भी छापेमारी कर चुकी है।

वजह समझ नहीं आती- जगदीश मास्टर का परिवार : जगदीश मास्टर के परिवार वालों ने बताया कि दो अगस्त 2021 को पूर्व केंद्रीय मंत्री संजय पासवान कासमा में आकर उनसे मिले थे। कई मुद्दों पर दोनों के बीच बात भी हुई थी, फिर छापेमारी क्यों हो रही है समझ में नहीं आता। जगदीश मास्टर के परिवार ने बताया कि एनआईए की टीम ने छापेमारी के दौरान घर के सभी सामान तितर-बितर कर दिए। छापेमारी के बारे में एसपी स्वप्ना गौतम मेश्राम ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया और कहा कि जब कुछ जानकारी मिलेगी तो साझा की जाएगी।

एक रात में दो-दो घरों में डकैती

10 लाख से अधिक की संपत्ति लूटी; छत के गेट से घर में घुसे बदमाश

REPORTER DHARBANGA : दरभंगा जिले के कमतौल थाना क्षेत्र के ब्रह्मपुर गांव में सोमवार की रात करीब दर्जन भर हथियारबंद बदमाशों ने जन वितरण प्रणाली दुकानदार समेत दो घरों में दस लाख से अधिक की संपत्ति लूट ली। घटनास्थल से महज पांच सौ गज की दूरी पर ब्रह्मपुर पुलिस पिकेट है, जहां पुलिस बल की तैनाती रहती है।

इसके बावजूद पुलिस रात में मौके पर नहीं पहुंची। मंगलवार की सुबह गृहस्वामियों ने शोरगुल किया तो अन्य ग्रामीणों को घटना की जानकारी हुई। सूचना पर कमतौल थानाध्यक्ष वरुण कुमार गोस्वामी ने दल-बल के साथ मौके पर पहुंचकर छानबीन की।

बांस के सहारे छत पर चढ़े डकैत : जानकारी के अनुसार, कुछ नकाबपोश बदमाश जनवितरण प्रणाली के विक्रेता राजमंगल ठाकुर के घर के दक्षिण दिशा में बांस रखकर उसके सहारे छत पर चढ़े और छत पर खुले दरवाजे से घर में घुस गए। इसके बाद गृहस्वामी राजमंगल ठाकुर को अपने कब्जे में ले लिया। मेन गेट खोलकर अन्य बदमाशों को अंदर बुला लिया। उनके घर से तीन लाख नकदी और सात लाख के स्वणाभूषण लूट लिया।

दो घंटे तक घर में की लूटपाट : यहां करीब एक घंटे तक बदमाशों ने उत्पात मचाया। राजमंगल ठाकुर व उनके स्वजन को कमरे में बंद कर दिया। शोरगुल करने पर जान से मार देने की धमकी दी। सभी बदमाश क्षेत्रीय भाषा में बात कर रहे थे। उनकी उम्र 25 से 35 वर्ष के आसपास रही होगी।

पड़ोस के घर को भी बनाया निशाना : इसके बाद पड़ोस के किसान अवधेश ठाकुर के घर में भी छत के सहारे बदमाश घुस गए। आलमीरा, पेटी, बक्सा आदि तोड़कर लूटपाट की। वृद्ध अवधेश ठाकुर ने बताया कि वह दरवाजे पर कमरे में रहते हैं। उनकी पुत्रवधू घर में रहती है। सोमवार की रात पुत्रवधू एक रिश्तेदार के मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए गांव से बाहर गई थी। पुत्रवधू के आने के बाद लूट की राशि व सामान की जानकारी हो सकेगी।

तीन घरों में भीषण आग, चार सगी बहनों की जिंदा जलकर मौत, आधा दर्जन से अधिक लोग झुलसे

REPORTER MUJFRPUR : बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में देर रात एक घर में भीषण आगजनी में चार सगी बहनों की जिंदा जलकर मौत हो गई। वहीं, आधा दर्जन से अधिक लोग झुलस गए हैं। इनमें सात बच्चे और महिलाएं शामिल हैं। उन्हें एसकेएमसीएच में भर्ती कराया गया है। इनमें से कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना सदर थाना क्षेत्र के रामदयालु की है। जानकारी के अनुसार, पीड़ित परिवार अनुसूचित जाति है। मृतक के स्वजन को प्रशासन ने चार-चार लाख रुपये का मुआवजा दे दिया है। इसके अलावा 51 हजार रुपये सहायता राशि दी गई है। आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। सदर थाना मामले की जांच कर रही है।

अगलगी में चार बेटियां की मौत के बाद बिलखती फूलो देवी।

बताया जाता है कि रात नौ बजे खाना खाकर सभी सो रहे थे। मकान के तीन अलग-अलग कमरे में सिर्फ बच्चे सोए थे। ये तीनों कमरे तीन भाइयों के हैं। उससे सटी झोपड़ी में महिलाएं एवं अन्य बच्चे सोए थे। रात करीब 11 बजे मकान से आग की तेज लपटें निकलती दिखाई दी। आसपास के लोगों ने आग पर नियंत्रण पाने का प्रयास किया, मगर इसपर काबू नहीं पाया जा सका।

चारों बेटियां कमरे में जिंदा जली : झोपड़ी में सो रहीं महिलाएं और बच्चे आग से बाहर निकल गए। हालांकि, कमरे के अंदर सो रहे बच्चे फंस गए। इससे नरेश राम की चार बेटियां सोनी कुमारी (12 वर्ष), शिवानी कुमारी (छह वर्ष), अमृता कुमारी (चार वर्ष) एवं रीता कुमारी (तीन वर्ष) की झुलसने और दम घुटने से मौत हो गई। वहीं, सात बच्चे एवं महिलाओं को लोगों ने आग से निकाल लिया।

दमकल की टीम ने आग पर पाया काबू : सूचना पर आधा घंटा बाद पहुंची दमकल की तीन गाड़ियों ने आग पर नियंत्रण किया। इससे आसपास के घर जलने से बच गए। घायलों को एसकेएमसीएच एवं सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सदर अस्पताल में भी भर्ती दो लोगों को बाद में एसकेएमसीएच रेफर कर दिया गया। यहां मुकेश राम के पुत्र कृष्ण कुमार (15 वर्ष) की हालत गंभीर बताई जा रही है।

एक मकान में साथ रहता है तीन भाइयों का परिवार : सुस्ता पंचायत के रामदयालु में टुनटुन राम के तीन पुत्र मुकेश राम, नरेश राम और राकेश राम के परिवार एक ही मकान के तीन कमरे में अलग-अलग रहते हैं। टुनटुन राम की तीन साल पहले ट्रेन से कटकर मौत हो हो गई थी। नरेश राम की पत्नी फुलो देवी ने बताया कि उसका गैस सिलेंडर खत्म हो गया था। इसलिए चूल्हे में ही खाना बनाया। आग को पूरी तरह बुझा दिया गया था।

तीन बहनों को बचाने के दौरान चौथी भी फंसी : रात करीब 11 बजे देखा कि झोपड़ी आग की चपेट में है। उसके तीन बच्चे बीच वाले कमरे में सो रहे थे। एक बेटी सोनी और नौ माह का बेटा उसके पास सोए थे। कमरे के अंदर सो रही तीन बहनों को बचाने के लिए सोनी अंदर घुसी, लेकिन आग की लपटें इतनी तेज थी कि वह भी इसमें फंस गई। कमरे में कोई खिड़की या वेंटिलेटर नहीं होने से कमरा आग की भट्ठी बन गई थी। इस कारण कोई बाहर नहीं आ सका। चारों बच्चियों के झुलसे हुए शव ही बाहर निकले। आसपास के लागों ने अन्य दो कमरे से महिलाओं और बच्चों को मुश्किल से बाहर निकाला।

विपक्षी एकजुटता का संदेश लेकर हेमंत सोरेन से मिले ललन सिंह

अब नीतीश करेंगे शिबू सोरेन से मुलाकात

REPORTER RANCHI : बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने देशभर में भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों को एकजुट करने की पहल शुरू कर दी है। इसी कड़ी में मंगलवार को जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात की।

सियासी तौर पर इस मुलाकात के कई मायने निकाले जा रहे हैं। हाल ही में जदयू के राज्यसभा सदस्य खीरू महतो भी हेमंत सोरने से मिले थे। इसे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की भाजपा विरोधी गठबंधन बनाने की कवायद का हिस्सा माना जा रहा है।

शिबू सोरेन से मुलाकात करेंगे नीतीश : राजनीतिक गलियारों में इस बात की भी चर्चा है कि जल्द ही नीतीश कुमार की मुलाकात झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष शिबू सोरेन से हो सकती है। रांची में हेमंत सोरेन से मुलाकात के बाद ललन सिंह ने कहा कि हेमंत सोरेन जी से मुलाकात हुई, जिसमें केंद्र की जनविरोधी सरकार के विरुद्ध मजबूत विपक्षी एकजुटता हेतु सार्थक चर्चा हुई।

विपक्ष को मजबूत करने की मुहिम में बिहार के सीएम : बता दें कि विपक्ष को एकजुट करने की मुहिम में जुटे नीतीश कुमार अलग-अलग राज्यों का दौरा कर रहे हैं। इसी कड़ी में उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से कोलकाता जाकर मुलाकात की थी। इसके बाद लखनऊ में समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव से लोकसभा चुनाव को लेकर विपक्ष की एकजुटता पर चर्चा की थी। इस दौरान उनके साथ बिहार के डिप्टी सीएम और लालू प्रसाद के छोट बेटे तेजस्वी भी मौजूद थे।

मोतिहारी शराबकांडः दिल्ली से मंगाई थी स्पिरिट, आरोपियों पर पहले से भी दर्ज हैं मामले

ट्रांसपोर्ट कंपनी ने निभाई अहम भूमिका, मुख्य सरगना की तलाश जारी

PHOTON REPORTER MOTHIHARI : बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में हुई जहरीली शराब कांड में पुलिस ने अवैध शराब करने वाले दो स्थानीय धंधेबाजों को गिरफ्तार किया है। धंधेबाज अजय कुमार यादव व ललन यादव की गिरफ्तारी कोटवा थाना क्षेत्र के दीपऊ स्थित उनके गांव से की गई है। पुलिस के हत्थे चढ़े दोनों धंधेबाजों ने बताया है कि जिले के तुरकौलिया, पहाड़पुर, हरसिद्धि, सुगौली व रघुनाथपुर ओपी क्षेत्र में जो कच्ची शराब बिकी, उसे तैयार करने के लिए दिल्ली से ट्रांसपोर्ट कंपनी के जरिए स्पिरिट मंगाई गई थी। पुलिस अधीक्षक कातिश कुमार कुमार मिश्र ने बताया है कि गिरफ्तार दोनों शराब के धंधेबाजों की गिफ्तारी जिला पुलिस और उत्पाद विभाग की विशेष टीम ने की है। पकड़े गए लोगों के खिलाफ पहले से भी अवैध शराब के कारोबार का मामला दर्ज है। पुलिस द्वारा की गई पूछताछ में धंधेबाजों ने मोतिहारी के हेनरी बाजार की ट्रांसपोर्ट कंपनी का नाम बताया है, जिसके माध्यम से स्पिरिट मंगाई गई थी। अब विशेष टीम संबंधित ट्रांसपोर्ट एजेंसी का सत्यापन करने के साथ-साथ उसके संचालक की खोज कर रही है। ट्रांसपोर्ट कंपनी के संचालक के पकड़े जाने के बाद यह भी साफ हो जाएगा कि स्पिरिट दिल्ली में कहां से, किसने और किसके लिए बुक की थी।

14 अप्रैल से शुरू हुआ मौत का सिलसिला, अबतक 39 की गई जान : बता दें कि 14 अप्रैल को जिले के तुरकौलिया थाना क्षेत्र की रघुनाथपुर ओपी से कच्ची शराब के जहरीली होने के बाद लोगों के मरने का सिलसिला शुरू हुआ था। देखते ही देखते रघुनाथपुर ओपी के बाद जहरीली शराब की गिरफ्त में आकर तुरकौलिया थाना क्षेत्र के अलावा सुगौली, हरसिद्धि, पहाड़पुर व पीपराकोठी थाना क्षेत्र के दर्जनों लोगों की मौत असमय हो गई थी।

अबतक 39 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं, 10 लोगों की आंखों की रोशनी भी जा चुकी है। मामले में पुलिस ने संबंधित थानों में प्राथमिकी दर्ज करने के बाद अबतक कुल सात लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। हालांकि, अभी भी मुख्य धंधेबाज की गिरफ्तारी होनी शेष है। अबतक पकड़े लोग स्थानीय धंधेबाज हैं, जो गांवों में चोरी-छिपे शराब बेचते हैं। उन लोगों की तलाश हो रही है, जो जिले के धंधेबाजों को शराब बनाने के लिए स्पिरिट की आपूर्ति करते हैं।

सस्पेंड किए गए कई पुलिसकर्मी : उल्लेखनीय है कि 39 मौत के बाद पुलिस के वरीय अधिकारियों ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जिले के पांच थानाध्यक्षों के अलावा एंटी लीकर टास्क फोर्स (एलटीएफ) के एक दारोगा, दो एएसआइ और नौ चौकीदारों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया था। सभी संबंधित पांच थानों में नए थानाध्यक्षों की तैनाती की गई थी। इसी के साथ पुलिस की ओर से लोगों के बीच जागरूकता अभियान शुरू किया गया है।

BRIEF NEWS

ओवैसी ने अतीक के हत्यारोपियों पर दिया विवादित बयान अखिलेश यादव पर बोले एसी में बैठकर ट्वीट करते हैं

मुरादाबाद : आल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लमीन (एआइएमआइएम) के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि प्रयागराज के अतीक-अशरफ की दिनदहाड़े पुलिस की मौजूदगी में हत्या करने वाले नाथूराम गोडसे की नाजायज औलाद हैं। पुलिस कस्टडी में उन्होंने दोनों को गोली मार दी। इसी तरह से फैसले होने लगेंगे तो न्यायालय और संविधान किसलिए हैं।

अतीक-अशरफ के कातिलों के घर नहीं चलवाया बुलडोजर : ओवैसी ने कहा कि योगी सरकार ने अतीक-अशरफ के कातिलों के घरों पर बुलडोजर क्यों नहीं चलवाया। वह नगर पंचायत कुंदरकी में एआइएमआइएम की प्रत्याशी जीनत मेंहदी के समर्थन में गूलर चौराहे पर जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुसलमान सियासी रूप से बहुत कमजोर है। इसलिए हमें सरेआम गोली मार दी जाती है। हम सियासी रूप से मजबूत होते तो किसी माइ के लाल में दम नहीं है कि गोली मार देता।

अखिलेश यादव पर साधा निशाना : ओवैसी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कातिल को क्या पुलिस कस्टडी में गोली मारी गई? राजीव गांधी, इंदिरा गांधी किसी के कातिलों को जेल से निकालकर गोली नहीं मारी गयी। सबके खिलाफ मुकदमे चले और सजाएं हुईं। उन्होंने कहा कि मैं अतीक-अशरफ के कातिलों के एनकाउंटर के पक्ष में नहीं हूं। कोर्ट से सजा मिलनी चाहिए।

ओवैसी ने सपा मुखिया अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि अखिलेश भैया कहां हैं। एसी में बैठकर ट्वीट करते हैं। प्रयागराज में पुलिस कस्टडी में जो हुआ, उस पर बोलने से डरते हैं। आप लोग अखिलेश भैया के पीछे लगे रहे। इससे कुछ नहीं होने वाला है। हमारी लीडरशिप होगी तो अपनी बात को मजबूती के साथ रखा जा सकेगा। उन्होंने उमरीकलां में भी अपने प्रत्याशियों के पक्ष में जनसभा की।

बिहार की राजनीति में अब भैंस, गधे और पनडुब्बी की हुई एंट्री; उपेंद्र ने की शुरूआत तो जदयू-राजद ने किया कटाक्ष

पटना : राजनीतिक लड़ाई में अब भैंस, गदहा और पनडुब्बी का सहारा लिया जाने लगा है। रविवार को इन्हीं प्रतीकों के माध्यम से हमले किए गए। शुरूआत राष्ट्रीय लोक जनता दल के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने की। वहीं, जवाबी हमला जदयू और राजद की ओर से हुआ। कुशवाहा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और राजद की दोस्ती पर कटाक्ष करते हुए कहा- वह जिस भैंस पर बैठे हैं, डूबना तय है।

जदयू और राजद के प्रवक्ताओं ने दी प्रतिक्रिया : इसके जवाब में जदयू और राजद के प्रवक्ताओं ने भी बिना समय गंवाए बता दिया कि कुशवाहा किस वाहन की सवारी कर रहे हैं। जदयू के प्रवक्ता और पूर्व मंत्री नीरज कुमार ने भाजपा की संकेत करते हुए कहा- कुशवाहा जिस पनडुब्बी पर बैठे हैं, 2024 के लोकसभा चुनाव में उसका डूबना तय है।

अपनी चिंता करें उपेंद्र कुशवाहा : जदयू प्रवक्ता : उन्होंने कुशवाहा को सलाह भी दी कि वह दूसरों की बजाय अपनी चिंता करें। जदयू में शामिल होकर विधान परिषद के सदस्य बने थे। कुछ बड़ा हासिल करने के लिए दूसरी तरफ चले गए, लेकिन वहां भी उन्हें कुछ मिलने वाला नहीं है।

राजद प्रवक्ता ने भी उपेंद्र पर की टिप्पणी : इधर, राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने उपेंद्र कुशवाहा को सबसे पहले मर्यादित भाषा के उपयोग की सलाह दी। साथ में जोड़ा कि हम यह नहीं कह सकते कि उपेंद्र कुशवाहा गधे की सवारी कर रहे हैं।

महात्मा गांधी के प्रपौत्र ने आनंद मोहन की रिहाई पर जताया विरोध, आरएसएस और हिंदू सभा पर भी बरसे तुषार गांधी

पटना : महात्मा गांधी के प्रपौत्र व लेखक तुषार गांधी ने कहा कि वर्तमान में देश बेहद नाजुक राजनीतिक दौर से गुजर रहा है। कुछ अति उत्साही राजनीतिक विचारधारा के लोग विपक्ष को जगह नहीं देना चाहते। उन्होंने आरोप लगाए कि गांधी की हत्या में गोडसे केवल हत्यारा था, असली कातिल आरएसएस और हिन्दू महासभा के लोग और विचार थे। जरूरत है कि हम कांग्रेस और राहुल गांधी के संघर्ष के साथ खड़े हों। तुषार गांधी रविवार को पटना में थे और कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में गांधी की प्रासंगिकता विषयक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। तुषार गांधी ने कहा कि भारत को भारत बनाने में कई महान विभूतियों ने प्राणों की आहुति दी, लेकिन वर्तमान दौर में उनके बलिदान को तोड़-मरोड़ के पेश करने का फैशन चल पड़ा है।

गांधी की विचारधारा को आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी: तुषार गांधी : जरूरी है कि हम नफरत व डर के माहौल को खत्म करें। गांधी की हत्या के बाद गांधीवाद की हत्या के लिए सत्तापक्ष आमादा है, हमें इसके खिलाफ खड़ा होना होगा।

उन्होंने कहा कि संघ के पास ऐसा नेता नहीं, जिसका कद बड़ा हो। कांग्रेस के पास ऐसे नेताओं की फेहरिस्त है। कहा कि जो सरदार पटेल की उंचाई मूर्ति की लंबाई से नापते हैं, वे पटेल के बारे में जानते तक नहीं। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी है कि गांधी की विचारधारा को हम आगे बढ़ाएं। संगोष्ठी को मदन मोहन झा, रिसर्च विभाग के अध्यक्ष आनंद माधव ने भी संबोधित किया। स्वागत भाषण वीणा शाही ने किया।

हमारे देश में 1946-47 जैसे हालात : तुषार गांधी

पटना : लेखक व महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी ने कहा कि हमारे देश में 1946-47 जैसे हालात बन गए हैं। दुष्कर्म व हत्यारे जेल से रिहा किए जा रहे हैं। बिहार में भी इन दिनों पूर्व सांसद आनंद मोहन की जेल से रिहाई का विषय चर्चा में है। इनकी रिहाई का हम सभी बहिष्कार करेंगे। हम अकेले लड़ाई नहीं लड़ सकते। ऐसे में सभी को एकजुट होकर आगे बढ़ना होगा। तुषार गांधी रविवार को स्काडा बिजनेस सेंटर में लोक परिषद व इप्टा की ओर से आयोजित वार्ता में बोल रहे थे। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ पत्रकार रजनी बख्शी, गांधीवादी अमरनाथ, जागृति रानी, विनोद कुमार समेत अन्य मौजूद थे।

देर रात दूल्हे की सफारी ने बाइक सवार दो युवकों को मारी टक्कर, दोनों की मौत; गाड़ी छोड़कर सभी फरार

बिरौल (दरभंगा) : बिरौल सहरसा मुख्य मार्ग पर हनुमाननगर गांव के समीप सोमवार की देर रात दूल्हे की सफारी ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार दो लोग की मौके पर ही मौत हो गई।ण्ण्पेट्रोलिंग के दौरान पहुंची बिरौल थाने की पुलिस दोनों को उठाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाई, जहां चिकित्सक ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए डीएमसीएच भेजे शव : पुलिस ने कागजी प्रक्रिया पूरी करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए डीएमसीएच भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, घटना देर रात करीब बारह बजे की है।ण्ण्सफेद रंग की स्ट्रीमर बाइक पर सवार दो लोग हनुमाननगर की ओर से जैसे ही सहरसा मुख्य मार्ग पर आए, अनियंत्रित अवस्था में आ रही दूल्हे की सफारी गाड़ी ने बाइक में ठोकर मार दी, जिससे बाइक सवार बिरौल थाना क्षेत्र के उछटी गांव निवासी बिजली दास के पुत्र अजय कुमार दास (18) और रसिक लाल राम के पुत्र राजेश कुमार राम (29) गंभीर रूप से घायल हो गए।

सम्राट चार्ल्स का राज्याभिषेक

भारत के मित्र और ब्रिटेन के नए बनने जा रहे सम्राट चार्ल्स-तृतीय के आगामी छह मई को होने वाले राज्याभिषेक में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भी उपस्थित रहेंगे। सम्राट चार्ल्स का राज्याभिषेक उस वक्त हो रहा है जब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री भारत मूल के श्रषि सुनक हैं। सुनक की पत्नी भारत के प्रख्यात उद्योगपति एन. नारायणमूर्ति की सुपुत्री अक्षता हैं। यह भी मानना होगा कि दोनों देशों के आपसी संबंधों को मजबूत रखने में ब्रिटेन में बसे हुए 15-16 लाख प्रवासी भारतीयों की अहम भूमिका तो रही ही है। इनमें अफ्रीकी और कैरिबियाई देशों से आकर बसे भारतीय मूल के लोग भी हैं। ये सब ब्रिटेन और भारत के बीच एक पुल का काम कर रहे हैं। प्रवासी भारतीय ब्रिटेन में हर क्षेत्र में मौजूद हैं। अब चाहे वो व्यापार, राजनीति, खेल का क्षेत्र हो या कोई और, इन्होंने सबमें एक मुकाम हासिल किया है। एक खास बात यह भी है कि ब्रिटेन ने आपसी संबंधों को बेहतर करने लिए ज्यादातर प्रवासी भारतीयों को ही राजपाट में शामिल कर रखा है। प्रिंस से किंग बने चार्ल्स पहली बार 1975 में भारत आए थे। गुजरे दशकों से जिन्हें सब प्रिंस चार्ल्स के रूप में जानते थे, वे अब हो रहे हैं किंग चार्ल्स तृतीय। वे भारत के अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन के साथ पहली बार दो मई, 1975 को नई दिल्ली आए थे। वे तब पूरी तरह से युवा थे। उनकी उम्र मात्र 22 साल थी। उनका पालम एयरपोर्ट पर तब के उपराष्ट्रपति बीडी जत्ती ने स्वागत किया था। वे राष्ट्रपति भवन में ही ठहरे थे। उनकी उस यात्रा की एक छोटी सी फिल्म यूट्यूब पर भी उपलब्ध है। उसमें लार्ड माउंटबेटन राष्ट्रपति भवन के बारे में प्रिंस चार्ल्स को इशारों से जानकारी दे रहे हैं। इसी राष्ट्रपति भवन में लार्ड माउंटबेटन भारत के अंतिम वायसराय के रूप में 12 फरवरी 1948 से 15 अगस्त 1947 और भारत के पहले गवर्नर जनरल के रूप में 21 जून 1948 तक रहे थे। इसलिए जाहिर है, उन्हें राष्ट्रपति भवन के भूगोल और वास्तुकला की जानकारी थी। इस बीच, भारत और ब्रिटेन के बीच संबंधों का एक पूरा इतिहास रहा है। यह सारा देश जानता है। वर्ष 2004 में द्विपक्षीय संबंध में जो रणनीतिक साझेदारी विकसित हुई उसे सभी सरकारों द्वारा और मजबूत ही किया गया। आज भारत एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जिसका परिणाम ब्रिटेन के पक्ष में हो सकता है। भारत पहले से ही क्रय शक्ति समता विनिमय दरों के हिसाब से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर खड़ा है और आने वाले दशकों में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। निश्चित रूप से किंग चार्ल्स ही यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके देश की सरकार आगे भी भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाकर रखे। वे निकट भविष्य में भारत का दौरा भी अवश्य करेंगे। भारत सरकार की तरफ से उन्हें भारत आने का निमंत्रण भी मिलेगा ही। वे तब राजधानी में दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी के सेंट जॉन वोकेशनल सेंटर की गतिविधियों को भी देखना चाहेंगे। वे पिछली बार जब दिल्ली आए थे, तब ब्रिटेन के प्रिंस थे। तब वे सेंट जॉन वोकेशनल सेंटर की गतिविधियों को भी देखने पहुंचे थे। यहां पर समाज के कमजोर तबकों से जुड़े सैकड़ों नौजवानों के लिए एयरकंडीशनिंग, मोटर मैक्निक, ब्यूटिशियन, कारपेंटर, टेलरिंग वगैरह के कोर्स चलाए जाते हैं। उस वक्त, उन्होंने सेंटर में ट्रेनिंग ले रहे बहुत से नौजवानों से बात भी की थी और संतोष जताया कि यहां से प्रशिक्षित नौजवान जीवन में अपने लिए जगह बना रहे हैं। दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी के सदस्य मोनोदीप डेनियल ने बताया कि प्रिंस चार्ल्स ने वादा किया था कि वे ब्रदरहुड सोसायटी के बाकी प्रोजेक्ट्स को आगे की यात्राओं में देखेंगे। दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी के संस्थापकों में गांधी जी के परम सहयोगी दीन बंधु सीएफ एंड्रयूज थे। उन्होंने सेंट स्टीफेंस कॉलेज में पढ़ाया भी था। वे दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी से 1916 में मिले थे। उसके बाद दोनों घनिष्ठ मित्र बने। उन्होंने 1904 से 1914 तक सेंट स्टीफंस कॉलेज में पढ़ाया। उन्हीं के प्रयासों से ही गांधी जी पहली बार 12 अप्रैल-15 अप्रैल, 1915 को दिल्ली आए थे। सम्राट चार्ल्स की मां राजकुमारी एलिजाबेथ 1997 में भारत दौरे के समय दिल्ली आई थीं। वह तब दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी के राजनिवास मार्ग पर स्थित ब्रदर्स हाउस भी गई थीं। वहां पर उन्होंने उन पादरियों से मुलाकात भी की थी जो अविवाहित रहते हुए दीन-हीनों की सेवा में भी लगे हुए हैं। इस बीच, मौजूदा जी-20 देशों के मंच का अध्यक्ष भारत चाहेगा कि उसे आगामी सितंबर में होने वाले शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन में ब्रिटेन का भरपूर साथ और समर्थन मिले। भारत में जी-20 शिखर सम्मेलन की तैयारियां युद्धस्तर पर चल रही हैं। इसके अलावा, भारत के विभिन्न शहरों में जी-20 से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।भारत में ब्रिटेन के राजदूत एलेक्जेंडर एलिस ने हाल ही में कहा भी है कि भारत में दुनिया की कई बड़ी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता है। जी-20 की अध्यक्षता करते हुए भारत के पास मौका है कि वह दुनिया को नया और आधुनिक भारत के दर्शन कराए। दरअसल भारत-ब्रिटेन विभिन्न क्षेत्रों में मिल-जुलकर काम कर रहे हैं। भारत दिसंबर 2022 से लेकर 30 नवंबर 2023 तक जी20 देशों की अध्यक्षता कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने जी 20 के लिए अपना एजेंडा समावेशी, महत्वकांक्षी और एक्शन आधारित बताया है। जी 20 के दौरान भारत के मॉडल को दूसरे देशों के सामने रखा जा सकता है, खासकर विकासशील देशों के सामने। एक बात और नोट करने लायक है कि ब्रिटेन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता का लगातार समर्थन किया है। यकीन मानिए कि इस बिन्दु पर ब्रिटेन के समर्थन से भारत को लाभ होगा।

'मन की बात' यूं ही नहीं बनी जन-जन की बात

MY STORY

✍ प्रो. जसीम मोहम्मद

ताजा सर्वे बताते हैं कि 'मन की बात' को आरंभ होने से अब तक एक अरब से अधिक लोग सुन चुके हैं। भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र, जहां टेलीविजन जैसे माध्यम की पहुंच पूरी तरह नहीं है, तक रेडियो के माध्यम से सुना जानेवाला यह कार्यक्रम देश को एक सूत्र में जोड़ने वाला प्रमाणित हुआ है। कोई भी देश तभी तरक्की कर सकता है जब उस देश की जनता अपनी बात को देश के मुखिया तक और देश का मुखिया अपनी बात जनता तक पहुंचा पाये । इससे देश की जनता में अपने मुखिया के लिए विश्वास पनपता है और देश के मुखिया को भी पता चलता है कि आखिर जनता की क्या अपेक्षाएं हैं। फिर पूरे जोश के साथ देश के विकास से जुड़े कार्यों में भागीदारी होती है और देश विकास की राह में अग्रसर होता है। इसी तरह के प्रयास का नाम है- 'मन की बात'। कोई आश्चर्य नहीं कि 'मन की बात' अब 'जन की बात' से भी आगे बढ़कर 'जन-जन की बात' बनता जा रहा है। नरेंद्र मोदी ने मई 2014 में प्रधानमंत्री बनने के कुछ महीनों बाद ही 'मन की बात' शृंखला शुरू की थी। 03 अक्तूबर, 2014 को इसके पहले एपिसोड का प्रसारण हुआ। तब से यह निरंतर जारी है। इसमें प्रधानमंत्री ने राजनीतिक कार्यक्षेत्र से अलग हटकर भारतीय समाज के कुछ उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण लोगों से संवाद स्थापित किया। हजारों ऐसे लोगों से बात की जो नाम और प्रसिद्धि की चकाचौंध से दूर रहकर चुपचाप कुछ नया और असाधारण कार्य कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज दुनिया के सबसे अग्रणी नेताओं में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी कार्यशैली और अनूठी पहल से वैश्विक राजनीतिक मंच पर अलग पहचान स्थापित की है। प्रधानमंत्री ने भारतीय राजनीति में अनेक दूरगामी कठोर निर्णयों के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक नवाचार के विविध आयोजनों में सदैव लीक से हटकर कुछ न कुछ नया करने का प्रयास किया है। अनेक अवसरों पर अपने निर्णयों से सहयोगियों के साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों को न केवल चौंकाया, बल्कि आश्चर्यचकित किया है। प्रधानमंत्री की अग्रगामी सोच और अनूठी पहल का उत्कृष्ट उदाहरण है, उनका मासिक रेडियो कार्यक्रम ह्यमन की बातह्ल। यह उनकी कार्यशैली को लेकर अलग प्रतिमान स्थापित करता है। आज 'मन की बात' रेडियो-टेलीविजन के माध्यम से सुना जाने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है। इससे नियमित जुड़ने वालों श्रोताओं और दर्शकों की संख्या लगभग 25 करोड़ है।

ताजा सर्वे बताते हैं कि 'मन की बात' को आरंभ होने से अब तक एक अरब से अधिक लोग सुन चुके हैं। भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र, जहां टेलीविजन जैसे माध्यम की पहुंच पूरी तरह नहीं है, तक रेडियो के माध्यम से सुना जानेवाला यह कार्यक्रम देश को एक सूत्र में जोड़ने वाला प्रमाणित हुआ है। कोई भी देश तभी तरक्की कर सकता है जब उस देश की जनता अपनी बात को देश के मुखिया तक और देश का मुखिया अपनी बात जनता तक पहुंचा पाये । इससे देश की जनता में अपने मुखिया के लिए विश्वास पनपता है और देश के मुखिया को भी पता चलता है कि आखिर जनता की क्या अपेक्षाएं हैं। फिर पूरे जोश के साथ देश के विकास से जुड़े कार्यों में भागीदारी होती है और देश विकास की राह में अग्रसर होता है। इसी तरह के प्रयास का नाम है- 'मन की बात'।

कोई आश्चर्य नहीं कि 'मन की बात' अब 'जन की बात' से भी आगे बढ़कर 'जन-जन की बात' बनता जा रहा है। नरेन्द्र मोदी ने मई 2014 में प्रधानमंत्री बनने के कुछ महीनों बाद ही 'मन की बात' शृंखला शुरू की थी। 03 अक्तूबर, 2014 को इसके पहले एपिसोड का प्रसारण हुआ। तब से यह निरंतर जारी है। इसमें प्रधानमंत्री ने राजनीतिक कार्यक्षेत्र से अलग हटकर भारतीय समाज के कुछ उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण लोगों से संवाद स्थापित किया। हजारों ऐसे लोगों से बात की जो नाम और प्रसिद्धि की चकाचौंध से दूर रहकर चुपचाप कुछ नया और असाधारण कार्य कर रहे हैं। ऐसी अनेक गुमनाम प्रतिभाएं 'मन की बात' के माध्यम से प्रकाश में आईं, जिनके संबंध में पहले अधिकतर लोगों को कुछ अधिक नहीं मालूम था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सुदूर क्षेत्रों तक अपनी बात पहुंचाना और अपनी पहुंच बनाना था । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस कार्यक्रम को प्रसारित करने का माध्यम रेडियो को बनाया गया। भारत में लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या के पास रेडियो उपलब्ध है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री देश की जनता को किसी एक विषय पर जागरूक कर उन्हें वह कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे राष्ट्र सही राह पर चलता हुआ तरक्की कर सके। प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 100वां एपिसोड रविवार को प्रसारित हुआ। यह कार्यक्रम जब आरंभ हुआ था, तब अनेक लोगों (शेषकर प्रधानमंत्री के राजनीतिक विरोधियों) को समझ में नहीं आया था। लोग रेडियो जैसे माध्यम को कमोबेश महत्वहीन मान रहे थे। अधिकांश विरोधियों ने 'मन की बात' को प्रसिद्धि का स्वांग कहा। मजाक । उनके अनेक सहयोगियों को भी समझ में नहीं आया कि वो करना क्या चाह रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने ठान ली थी। देश की धड़कन माने जाने वाले आकाशवाणी की मंद और धीमी होती हुई आवाज को उन्होंने ऐसी पहचान दी कि आज देश के कोने-कोने में इसे सुना जा रहा है। यह आज जीवंत लोकप्रिय कार्यक्रम बन चुका है। प्रधानमंत्री कहते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान हो, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ हो, या हर घर तिरंगा अभियान हो, 'मन की बात' ने इन अभियानों को जन आंदोलन बना दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस कार्यक्रम के जरिये पूर्वोत्तर और अन्य राज्यों की संस्कृति और त्योहारों को लोकप्रिय बनाने और मुख्यधारा में लाने के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में सेवा की। उन्होंने कहा भी- 'मन की बात, वास्तव में, हमारी सभ्यता और लोकाचार की भावना का प्रतिबिंब है।' 'मन की बात' की विषय वस्तु के लिए जनता से आग्रह किया जाता है कि वे विषय भेजें। सलाह दें। इसके लिए एक टोल फ्री नंबर भी है। लोगों के भेजे गए विषयों में से ही प्रधानमंत्री किसी एक का चुनाव करते हैं। फिर उस पर जनता को संबोधित करते हैं। इस संबोधन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आकाशवाणी और दूरदर्शन के चैनलों के साथ गैरसरकारी रेडियो और चैनलों का भी प्रयोग किया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन इतना सहज होता है कि जनता पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है । इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री यही आशा करते हैं कि लोग प्रेरणा लेकर अच्छे एवं सही मार्ग पर चलें। अभी तक कई विषयों पर प्रधानमंत्री अपने मन की बात लोगों से साझा कर चुके हैं। वो 'मन की बात' में विज्ञान, कौशल विकास, स्वच्छ भारत अभियान, स्वास्थ्य और दिव्यांग बच्चों की छात्रवृत्ति पर चर्चा कर चुके हैं। नौजवानों को नशे से दूर रहने का सलाह दे चुके हैं। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ जनता से संवाद कर चुके हैं। बच्चों को परीक्षा के समय होने वाले तनाव से बचाने के लिए प्रभावशाली पहल कर चुके हैं। किसानों से उनकी समस्या पर रूबरू हो चुके हैं। बोर्ड परीक्षा में सफल बच्चों को बधाई देकर प्रोत्साहित कर चुके हैं। वन रैंक वन पेंशन के मुद्दे पर अपनी बात कह चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योग के लाभ गिना चुके हैं। सामाजिक बुराई भ्रूण हत्या के दुष्प्रभाव से आगाह कर चुके हैं। लड़कियों के समग्र विकास पर चर्चा कर चुके हैं। उनके संवाद में भारतीय सैनिकों की प्रशंसा, जन धन योजना एवं अन्य कई विकास योजनाओं की सफलता, खिलाड़ियों की प्रशंसा, समय-समय पर होने वाली प्राकृतिक आपदाओं सहित तमाम विषय शामिल हो चुके हैं। प्रधानमंत्री के देश की जनता से जुड़ने की इस अनूठी पहल की चारों ओर प्रशंसा हो रही है । बावजूद इसके बहुत से लोगों के मन में यह सवाल होगा कि आखिर इस कार्यक्रम की शुरूआत क्यों की गई। दरअसल प्रधानमंत्री चाहते थे कि देश और समाज को समझने के लिए आम नागरिक से नियमित अंतराल पर संवाद किया जाए। लोगों को यह पता चलना चाहिए सरकार उनके लिए क्या कर रही है। राष्ट्र निर्माण और शासन में आम आदमी का समर्थन पाना भी उनका उद्देश्य है। आज मन की बात एक ऐसा ऐतिहासिक कार्यक्रम बन गया है, जिसमें प्रधानमंत्री ने स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से लेकर स्वास्थ्य संबंधी विषयों की विस्तृत शृंखला को संबोधित किया है। इसमें उन्होंने सफलताओं के पीछे लोगों के योगदान को सराहा है। समग्र कल्याण पर योग जैसे अभ्यास की पैरवी भी की है। 100वीं कड़ी को देश-दुनिया में जो प्यार मिला है, उसने इस कार्यक्रम के महत्व को बढ़ा दिया है।

मेरे (लेखक) मन में प्रधानमंत्री के 'मन की बात' को लेकर सदैव उत्साह रहा है। नरेन्द्र मोदी अध्ययन केंद्र की स्थापना के साथ ही मैं प्रधानमंत्री के कार्यक्रमों को लेकर रोमांचित और उत्साहित रहा हूं। 'मन की बात' को लेकर मैं आरंभ से ही आशान्वित रहा हूं कि यह गेम चेंजर आयोजन प्रमाणित होगा। मुझे यह साझा करते हुए गौरव की अनुभूति हो रही है कि 'मन की बात' के दो वर्ष पूरे होने पर मैंने नमो केंद्र के सौजन्य से इसी नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की थी। यह इस कार्यक्रम पहला प्रिंटेट प्रारूप था। इसे प्रधानमंत्री को सौंपने का भी मुझे मौका मिला। इसका निशुल्क वितरण किया गया। प्रसन्नता है यह है कि नरेंद्र मोदी अध्ययन केंद्र ने 'मन की बात' की हिंदी और अंग्रेजी में ई-पुस्तक पर काम पूरा कर लिया है। यह केंद्र की वेबसाइट पर निशुल्क उपलब्ध है। मेरा अभिमत है कि व्यक्ति को 'हमेशा राष्ट्र को पहले रखना चाहिए'। भारत के विकास की कहानी 'नारी शक्ति' से भी रेखांकित होती है।

(लेखक, नरेंद्र मोदी अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के सभापति हैं)।

कलम की मजबूत धार, स्वस्थ लोकतंत्र का आधार

हर साल 03 मई को अंतरराष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। प्रेस को सदैव लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की संज्ञा दी जाती रही है, क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती में इसकी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है कि स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता को बहुत अहम माना गया है। विडंबना यह है कि विगत कुछ वर्षों से प्रेस स्वतंत्रता के मामले में लगातार कमी देखी जा रही है। कलम की धार को तलवार से भी ज्यादा ताकतवर और प्रभावी इसलिए माना गया है क्योंकि इसी की सजगता के कारण न केवल भारत में बल्कि अनेक देशों में पिछले कुछ दशकों के भीतर बड़े-बड़े घोटालों का पदार्फाश हो सका। इसके चलते तमाम उद्योगपतियों, नेताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों को एक ही झटके में अर्श से फर्श पर आना पड़ा।

यही कारण हैं कि समय-समय पर कलम रूपी इस हथियार को भोथरा करने के कुचक्र होते रहे हैं और विभिन्न अवसरों पर न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में सच की कीमत कुछ पत्रकारों को अपनी जान देकर भी चुकानी पड़ी है। 03 दिसम्बर 1950 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था- मैं प्रेस पर प्रतिबंध लगाने के बजाय, उसकी स्वतंत्रता के बेजा इस्तेमाल के तमाम खतरों के बावजूद पूरी तरह स्वतंत्र प्रेस रखना चाहूंगा क्योंकि प्रेस की स्वतंत्रता एक नारा भर नहीं है बल्कि लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग है।

पिछले कुछ दशकों में स्थितियां काफी बदल गई हैं। आज दुनियाभर में पत्रकारों पर राजनीतिक, आपराधिक और आतंकी समूहों का सर्वाधिक खतरा है। इस दौरान दुनियाभर के न्यूज रूम्स में सरकारी तथा निजी समूहों के कारण भय और तनाव में वृद्धि हुई है। पेरिस स्थित ह्यरिपोर्ट्स सैन्स फ्रंटियर्स (आरएसएफ) अथवा रिपोर्ट्स विदआउट बॉर्डर्स हर साल अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी करते हैं। रिपोर्ट्स विदआउट बॉर्डर्स गैर-लाभकारी संगठन है। यह विश्वभर के पत्रकारों पर हमलों का दस्तावेजीकरण करने और मुकाबला करने के लिए कार्यरत है और प्रतिवर्ष वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स अर्थात विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक प्रस्तुत करता है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2019 में उसने भारत सहित विभिन्न देशों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति की विवेचना करते हुए स्पष्ट किया था कि किस प्रकार विश्वभर में पत्रकारों के खिलाफ घृणा हिंसा में बदल गई है, जिससे दुनियाभर में पत्रकारों में डर बढ़ा है।

> भारतीय संविधान में प्रेस को अलग से स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई है बल्कि उसकी स्वतंत्रता भी नागरिकों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में ही निहित है और देश की एकता तथा अखंडता खतरे में पड़ने की स्थिति में इस स्वतंत्रता को बाधित भी किया जा सकता है। कल्पना की जा सकती है कि प्रेस की स्वतंत्रता अगर इसी प्रकार सवालों के घेरे में रही तो पत्रकार कैसे पारदर्शिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देते रहेंगे? यह भी जरूरी है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को भी अपनी सीमा और मयार्दा में रहना होगा।

2022 में उसकी रिपोर्ट में नार्वे ने प्रेस की आजादी के लिए पिछली बार की ही तरह पहला स्थान प्राप्त किया। भारत को 180 देशों में 150वां स्थान दिया गया। भारत इस रैंकिंग में पिछले वर्ष के मुकाबले आठ0 स्थान नीचे फिसला है। 2021 की रैंकिंग में भारत का स्थान 142वां था। 2022 के सूचकांक में प्रेस फ्रीडम, सरकारी दखलंदाजी और मीडिया की कार्यप्रणाली के अलावा सोशल मीडिया पर फैल रही फेक न्यूज तथा उसके प्रभावों पर भी ध्यान दिया गया है और रैंकिंग में प्रेस की पांच प्रकार की स्वतंत्रता को आधार बनाया गया है। पांचों क्षेत्रों में मिले अंकों के औसत के आधार पर ही सभी देशों की रैंकिंग निर्धारित हुई है। इस आधार में प्रेस की राजनीतिक, आर्थिक, विधायिका, सामाजिक और सेकुलर स्वतंत्रता शामिल है। 2022 की रैंकिंग में भारत राजनीतिक स्वतंत्रता में 40.76 अंकों के साथ 145वें, आर्थिक स्वतंत्रता में 30.39 अंकों के साथ 149वें, लेजिस्लेटिव स्वतंत्रता में 57.02 अंकों के साथ 120वें, सामाजिक स्वतंत्रता में 56.25 अंकों के साथ 127वें और सेकुलर फ्रीडम में 20.61 अंकों के साथ 163वें स्थान पर है। हालांकि प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की स्थिति पड़ोसी देशों से बेहतर है। भारत के मुकाबले म्यांमार 176वें, चीन 175वें, बांग्लादेश 162वें, पाकिस्तान 157वें और अफगानिस्तान 156वें स्थान पर हैं। भारत के लोकतंत्र को दुनिया का सबसे सफल और बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है। ऐसे में अगर नार्वे जैसा छोटा सा देश प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में शीर्ष स्थान पर है तो यह सोचने का विषय है। प्रेस की आजादी के मामले में अगर नेपाल और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देश हमसे आगे हैं तो गंभीरता से मंथन करने की जरूरत है। प्रेस की स्वतंत्रता में कमी आने का सीधा और स्पष्ट संकेत है कि लोकतंत्र की मूल भावना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो अधिकार निहित है, उसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है।

भारतीय संविधान में प्रेस को अलग से स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई है बल्कि उसकी स्वतंत्रता भी नागरिकों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में ही निहित है और देश की एकता तथा अखंडता खतरे में पड़ने की स्थिति में इस स्वतंत्रता को बाधित भी किया जा सकता है। कल्पना की जा सकती है कि प्रेस की स्वतंत्रता अगर इसी प्रकार सवालों के घेरे में रही तो पत्रकार कैसे पारदर्शिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देते रहेंगे? यह भी जरूरी है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को भी अपनी सीमा और मयार्दा में रहना होगा।

Social Media Corner

सच के हक में...

झारखंड के इतिहास में पहली बार स्कूली शिक्षा जगत में नई शुरूआत हुई है। आज राज्य भर में 80 उत्कृष्ट विद्यालयों के उद्घाटन समारोह में शामिल सभी बच्चों, पदाधिकारियों एवं अन्य लोगों को अनेक-अनेक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार। राज्य के नौनिहालों के लिए शिक्षा की दिशा में सरकार ने यह महत्त्वाकांक्षी कदम उठाया है और हमारा यह कदम राज्य के प्रत्येक पंचायत तक जाएगा।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

आजादी के 'अमृतकाल' में कनार्टक का ये पहला चुनाव है। ये चुनाव कर्नाटक को नंबर वन राज्य बनाने का चुनाव है। ये चुनाव तय करेगा कि आने वाले 25 वर्षों में कर्नाटक विकास की किस उंचाई पर होगा। कर्नाटक को हमें विकसित भारत की ड्राइविंग फोर्स बनाना है, ग्रोथ इंजन बनाना है। इसलिए भाजपा सरकार दोबारा बनाना है, डबल इंजन की सरकार को लाना है। प्रधानमंत्री @NARENDRA MODI जी।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

प्रधानमंत्री के 'मन की बात' और नव जागरण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' ने अपनी 100 कड़ियां सफलतापूर्वक पूर्ण कर इतिहास रच दिया। यह आकाशवाणी के इतिहास का ऐसा कार्यक्रम बना जिसमें प्रधानमंत्री ने आम जनता से सीधा संवाद किया और इसे राजनीति से पृथक रखा। यह एक सुखद अनुभव है कि 'मन की बात' भारत में बदलाव का बड़ा संवाहक बना। भारतीय समाज को निराशा और अंधकार से निकालने में मदद दी। विकास और प्रगति को नए पंख दिए। 'मन की बात' से भारत की सांस्कृतिक विरासत पुनर्जीवित हुई।भूली परम्पराएं फिर याद आईं। हिंदू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पुनर्जागरण हुआ।

जैसे दूरदर्शन के इतिहास में रामायण धारावाहिक संपूर्ण भारत में लोगों को घरों में टीवी सेट के सामने बैठा देता था, वैसे ही आज हर माह के अंतिम रविवार को लोग 'मन की बात' को सुनने के लिए बैठ जाते हैं। ऐसा नहीं है कि 'मन की बात' को केवल मोदी समर्थक ही सुनते हैं। इसे परम्परागत राजनीतिक विरोधी सुनते हैं। विश्व के 53 देशों में 'मन की बात' का सीधा प्रसारण होना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात यह है कि प्रधानमंत्री मोदी 'मन की बात' में जो विचार व्यक्त करते हैं या संदेश देते हैं उसे देश का हर आयु वर्ग का नागरिक व्यवहार में लाने का प्रयास भी करता है। इसलिए वह जन आंदोलन बन जाता है।

यह कार्यक्रम 'सेल्फी विद डॉटर' जैसे अभियानों के माध्यम से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान को सफलता का भी गवाह है। स्वच्छता आंदोलन तो व्यापक रूप ले चुका है। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में ही समुद्र किनारे फैले कचरे व उसकी सफाई पर नागरिकों का ध्यान केंद्रित किया था। 'मन की बात' में कई बार यह अपील की गई कि देश के युवाओं व अन्य सभी नागरिकों को वर्ष में एक बार कही न कहीं तीर्थाटन पर अवश्य जाना चाहिए। मोदी कहते हैं कि विदेश यात्रा पर जाने से अच्छा है कि अपने ही देश के अपने राज्य या फिर अन्य दूसरे राज्यों के 15 ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों का भ्रमण करना चाहिए। उनको जानना और समझना चाहिए। पर्यटन की गतिविधियों को बढ़ावा देने में भी 'मन की बात' अहम माध्यम सिद्ध हुआ। आज देश के सभी धार्मिक व पर्यटन स्थलों में बहार आई हुई है। धार्मिक पर्यटन को भी खूब बढ़ावा मिला है। नये पर्यटक स्थलों की भी खूब चर्चा हो रही है। महाराष्ट्र की पंढरपुर और सुदूर मणिपुर और सौराष्ट्र के स्थलों को बहुत सारे लोगों ने 'मन की बात' से ही जाना।

पर्यटन के साथ प्रधानमंत्री लोकल फॉर वोकल को भी बढ़ावा देते हैं। इसी का प्रभाव है कि स्थानीय उत्पादों को लोग पसंद कर रहे हैं। इनकी मार्केटिंग के सफलता का आसमान चूम रही है। अब दीपावली पर चाइना मेड गणेश- लक्ष्मी की मूर्तियां नहीं, देश में निर्मित मूर्तियां पसंद की जा रही हैं। दिवाली पर ही बिकने वाली चीनी झालरों का मार्केट गिर चुका है। कुम्हार का चाक एक बार फिर घूमने लगा है।

प्रधानमंत्री की अपील पर अब बच्चों के खिलौनों की भी दुनिया में भी नई क्रांति आ रही है। इनमें भी चीन का वर्चस्व खत्म हुआ है। प्रधानमंत्री की बात का बच्चों पर असर पड़ा है। वह अब दादा-दादी और नाना- नानी की कहानी सुनने लगे हैं। शिक्षण संस्थाओं में ऐसी कहानियों पर कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा है। 'मन की बात' की एक और सफलता भारत में डिजिटलीकरण की धूम होना है। मन की बात ने जल संरक्षण अभियान को सफल बनाया है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक किया है।योग, आयुर्वेद और अध्यात्म का संगम लोगों के दिलों में हिलोर मारने लगा है। एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसे संकल्पों को पूर्ण होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। वह दिन दूर नहीं जब खेलों की कमेंट्री भी संस्कृत व क्षेत्रीय भाषा में होगी।

सहजता से तलाक

गंभीर विवाद की स्थिति में तलाक का सुगम होना जरूरी है और इस दिशा में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला बहुत सराहनीय है। न्यायालय संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी शक्तियों के अनुसार, न सुधरने योग्य आधार पर एक विवाह को भंग कर सकता है और दोनों पक्षों को परिवार न्यायालय में भेजे बिना भी तलाक दे सकता है। फिलहाल, परिवार न्यायालय में आपसी सहमति से भी तलाक प्राप्त करने के लिए छह से 18 महीने तक इंतजार करना पड़ता है। न्यायालय के नए फैसले के बाद तलाक के लिए प्रतीक्षा अवधि का महत्व नहीं रह जाएगा। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि तलाक की स्थिति पैदा होने पर विवाह में किसी न किसी पक्ष को बहुत पीड़ा या प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है। वास्तव में कानून के तहत प्रतीक्षा अवधि की व्यवस्था तलाक के फैसले पर पुनर्विचार के लिए है, पर इस अवधि का इस्तेमाल अक्सर नकारात्मक ढंग से परेशान करने के लिए होता है। कई ऐसे मामले हैं, जहां तलाक के आकांक्षी पर एक-एक पल भारी पड़ता है। ऐसे में, सर्वोच्च न्यायालय का फैसला पीड़ितों के लिए बड़ी राहत है। जब जरूरी होने पर तत्काल तलाक की सुविधा हो जाएगी, तब बाकी रिश्तों पर भी सकारात्मक असर पड़ेगा। इसमें शक नहीं कि भारत में तलाक लेने की प्रक्रिया को समझ-बूझकर जटिल बनाया गया है। प्रक्रिया ऐसी है कि लोग समझौता करके जीना पसंद करते हैं, तलाक लेना महंगा भी है और इसमें मानसिक रूप से लंबी पीड़ा से गुजरना पड़ता है। सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ ने अब साफ कर दिया है कि अदालत अनुच्छेद 142 के तहत ऐसे मामलों में भी विवाह को भंग कर सकती है, जहां एक पक्ष तलाक के लिए सहमत नहीं है। अदालत में यह मामला काफी पहले से ही चल रहा था। जून 2016 में दो न्यायाधीशों की पीठ ने पक्षकारों को परिवार अदालत में भेजे बिना तलाक देने के लिए अनुच्छेद 142 के तहत अदालत की शक्तियों के प्रयोग के संबंध में मामले को पांच न्यायाधीशों की बड़ी पीठ के पास भेज दिया था।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PRIVATE LIMITED, Kathitand, Near Tender Bagicha, P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001.Editor-Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

आईपीएल में आज पंजाब किंग्स और मुंबई इंडियंस में होगा कड़ा मुकाबला

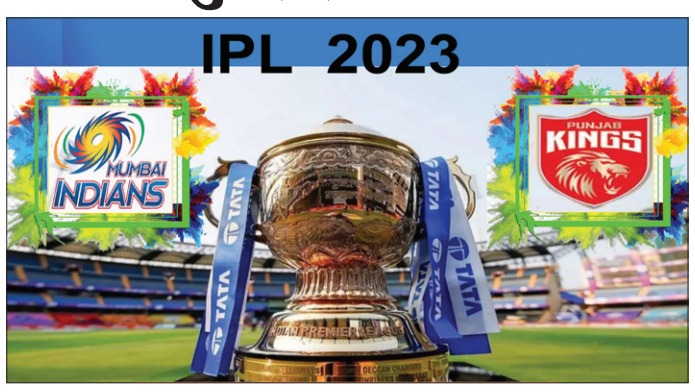

मोहाली (एजेंसी)। आईपीएल में बुधवार को अपने घरेलू मैदान पर पंजाब किंग्स की टीम मुंबई इंडियंस पर जीत के इरादे से उतरेगी। कप्तान शिखर धवन की पंजाब किंग्स की टीम के नौ मैचों में 10 अंक हैं और वह छठे स्थान पर है। वह इस मैच में जीत दर्ज करके प्लेऑफ में पहुंचने की अपनी संभावनाओं को मजबूत करना चाहेगी। उसे इस मैच में घरेलू हालातों का भी लाभ मिलेगा। टीम को अगर प्लेऑफ में पहुंचना है तो अब हर मैच जीतना होगा।

वहीं पिछले मैच में मिली रोमांचक जीत से उत्साहित मुंबई इंडियंस इस मैच में भी अपनी लय बरकरार रखना चाहेगी। उसके लिए हालांकि ये मैच आसान नहीं रहेगा क्योंकि पंजाब किंग्स उसे घरेलू मैदान पर कड़ी टक्कर देना चाहेगी। मुंबई और पंजाब दोनों ही टीमों के लिए ये अहम मैच है जिसके कारण इसका रोमांचक होना तय है। मुंबई की टीम पिछले सत्र में दसवें और अंतिम स्थान पर रही थी। इस बार भी उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। कप्तानी रोहित शर्मा की इस टीम के आठ मैचों में आठ अंक है और वह सातवें स्थान पर है। ऐसे में एक हार भी उसे भारी पड़ जाएगी।

मुंबई को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ पिछले मैच में अंतिम ओवर में जीत मिली थी जिसका लाभ उसे इस मैच में भी बढ़े हुए मनोबल के रुप में मिलेगा। पिछले मैच में ऑलराउंडर टिम डेविड ने अंतिम ओवर में लगातार तीन छक्के लगाकर अपनी टीम को जीत दिलायी थी। टिम ने 14 गेंदों पर नाबाद 45 रन बनाये थे। इससे मुम्बई की टीम 212 रनों के लक्ष्य को भी हासिल कर पायी थी। इस मैच में सूर्यकुमार यादव ने भी अर्धशतक 55 रन बनाकर फार्म हासिल किया था और अब वह इस मैच में भी बड़ी पारी खेलना चाहेंगे। इसके अलावा ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन 44, इशान किशन 28 और तिलक वर्मा ने भी नाबाद 29 रन बनाये थे। इन सभी खिलाड़ियों के फार्म हासिल करने से मुंबई को अब पंजाब के खिलाफ अच्छे स्कोर की उम्मीद रहेगी। वहीं दूसरी ओर पंजाब की टीम आक्रामक क्रिकेट खेलती है पर उसके शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी उसे नुकसान पहुंचा सकती है।

कप्तान शिखर धवन और उनके सलामी जोड़ीदार प्रभसिमरन सिंह के अलावा पंजाब के अन्य बल्लेबाज उम्मीद के अनुसार रन नहीं बना पाये हैं। सीएसके के खिलाफ पिछले मैच में हालांकि उसके सभी बल्लेबाजों ने रन बनाये थे जो टीम के लिए राहत की थी। अब पंजाब का इस मैच में भी अपने खिलाड़ियों से उसी प्रकार के प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी। पंजाब को यदि ये मैच जीतना है तो धवन और प्रभसिमरन को अच्छी शुरुआत देनी होगी। इसके साथ ही मध्यक्रम में लियाम लिविंगस्टोन, सैम करेन और विकेटकीपर बल्लेबाज जितेश शर्मा को भी बड़ी पारियां खेलनी होंगी।

पंजाब की टीम को मुम्बई के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर और अनुभवी स्पिनर पीयूष चावला से सावधान रहना होगा।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं-

पंजाब किंग्स: शिखर धवन (कप्तान), अर्शदीप सिंह, बलतेज सिंह, राहुल चाहर, सैम कुर्रन, ऋषि धवन, नाथन एलिस, गुरनूर बराड़, हरप्रीत बराड़, हरप्रीत सिंह, विद्वाथ कावेरप्पा, लियाम लिविंगस्टोन, मोहित राठी, प्रभसिमरन सिंह, कागिसो रबाडा , भानुका राजपक्षे, एम शाहरुख खान, जितेश शर्मा, शिवम सिंह, मैथ्यू शॉर्ट, सिकंदर रजा, अथर्व तायडे।

मुंबई इंडियंस: रोहित शर्मा (कप्तान), जोफ्रा आर्चर, अरशद खान, जेसन बेहरेनडॉर्फ, डेवाल्ड ब्रेविस, पीयूष चावला, टिम डेविड, राघव गोयल, कैमरन ग्रीन, इशान किशन, दुआन जानसन, क्रिस जॉर्डन, कुमार कार्तिकेय, आकाश मधवाल, रिले मेरेडिथ , शम्स मुलानी, रमनदीप सिंह, संदीप वारियर, ऋतिक शौकीन, ट्रिस्टन स्टब्स, अर्जुन तेंदुलकर, तिलक वर्मा, विष्णु विनोद, नेहल वढेरा, सूर्यकुमार यादव।

मैड्रिड ओपन: सिटसिपास और स्वियातेक टूर्नामेंट के अगले दौर में

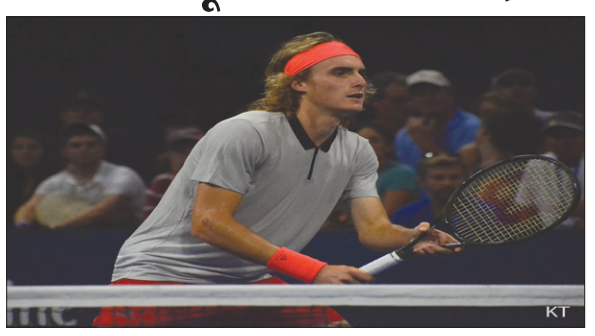

मैड्रिड (एजेंसी)। स्टेफानोस सिटसिपास और इगा स्वियातेक ने तीन सेट तक चले कड़े मुकाबलों में जीत दर्ज करके मैड्रिड ओपन टेनिस टूर्नामेंट के अगले दौर में प्रवेश किया। तीसरी वरीयता प्राप्त सिटसिपास ने कुछ विषम पलों से गुजरने के बाद 31वें वरीय सेबेस्टियन बेज को 7-5, 3-6, 6-3 से हराकर इस क्ले कोर्ट टूर्नामेंट के अंतिम 16 में जगह बनाई। महिला वर्ग में विश्व की नंबर एक खिलाड़ी स्वियातेक को भी 16वीं वरीयता प्राप्त एकातेरिना एलेक्जेंड्रोवा पर 6-4, 6-7 (3), 6-3 से जीत दर्ज करने के लिए पसीना बहाना पड़ा। उनका अगला मुकाबला 27वीं वरीयता प्राप्त पेट्रा मार्टिच से होगा जिन्होंने 11वीं वरीयता प्राप्त बारबोरा क्रेजिक्कोवा को 6-3, 7-6 (1) से हराया।

मैड्रिड में पिछले साल की उपविजेता तीसरी वरीयता प्राप्त जेसिका पेगुला ने मार्टिना ट्रेविसन को 6-3, 2-6, 6-3 से हराकर अंतिम आठ में प्रवेश किया। दूसरी वरीयता प्राप्त आर्यना सबलेंका ने रूसी किशोरी मीरा एंड्रीवा को 6-3, 6-1 से पराजित करके उनके शानदार अभियान पर रोक लगाई। महिला वर्ग के अन्य मैचों में नौवीं वरीयता प्राप्त मारिया सकारी ने पाउला बडोसा को 6-4, 6-4 से,जबकि 12 वीं वरीयता प्राप्त वेरोनिका कुदेरमेतोवा ने आठवीं वरीयता प्राप्त डारिया कसाटकिना को 7-5, 1-6, 7-6 (2) से हराया।

पुरुषों में दूसरी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव ने हम वतन रूसी खिलाड़ी एलेक्जेंडर शेवचेंको को 4-6, 6-1, 7-5 से हराकर अंतिम 16 में जगह बनाई। उनका अगला मुकाबला क्वालीफायर असलान करतसेव से होगा जिन्होंने 16वीं वरीयता प्राप्त एलेक्स डी मिनौर को 6-3, 4-6, 6-4 से हराया। पुरुष वर्ग के अन्य मैचों में आठवीं वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज ने क्रिस्टियन गारिन को 6-1, 7-6 (4), झांग झिझेन ने 11वीं वरीयता प्राप्त कैमरून नॉरी को 2-6, 7-6 (2), 7-6 (2) और बर्नबे जपाटा मिरालेस ने क्वालीफायर रोमन सफीउलिन को 6-3, 3-6, 6-3 से पराजित किया।

भारतीय टीम टेस्ट रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंचीं , ऑस्ट्रेलिया दूसरे स्थान पर खिसकी

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा टेस्ट रैंकिंग में भारतीय टीम नंबर एक स्थान पर पहुंच गयी है। इससे अगले माह जून में होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल से पहले भारतीय टीम के हौंसले बुलंद हुए हैं। आईसीसी के अनुसार भारत को 25 मैचों में 3031 अंक मिले हैं और उसकी रेटिंग 121 हो गयी है। वहीं दूसरे स्थान पर फिसली ऑस्ट्रेलियाई टीम के 23 मैचों के 2679 अंक हैं। उसे 116 रेटिंग मिली है। डब्ल्यूटीसी से ठीक पहले रैंकिंग गिरने से ऑस्ट्रेलियाई टीम का मनोबल कम होगा। ऑस्ट्रेलियाई टीम लंबे समय से पहले स्थान पर जमी हुई थी पर पिछले कुछ समय में भारतीय टीम ने लगातार अच्छा प्रदर्शन कर उसे पीछे कर दिया है। वहीं इंग्लैंड की टीम तीसरे जबकि दक्षिण अफ्रीका चौथे नंबर पर है। न्यूजीलैंड की टीम को पांचवां स्थान मिला है। डब्ल्यूटीसी फाइनल भारत ओर इंग्लैंड के बीच सात जून से द ओवल में खेला जाएगा।

इसके अलावा भारतीय टीम टी20 क्रिकेट में भी पहले स्थान पर कायम है। यहां उसकी रेटिंग 267 की है, वहीं अंक 18, 445 हैं। दूसरे नंबर पर इंग्लैंड है, जिसकी रेटिंग 261 है, इस सूची में 255 की रेटिंग के साथ पाकिस्तान की टीम तीसरे नंबर पर है। दक्षिण अफ्रीका की टीम 253 की रेटिंग के साथ नंबर चार पर बरकरार है। नंबर पांच पर न्यूजीलैंड है, जिसकी रेटिंग 253 है। एकदिवसीय में हालांकि ऑस्ट्रेलियाई टीम113 की रेटिंग के सा ही शीर्ष पर है। वहीं दूसरे नंबर पर न्यूजीलैंड है। उसकी रेटिंग भी 113 है भारतीय टीम की रेटिंग भी 113 है पर वह औसत में कम होने के कारण तीसरे नंबर पर है।

लखनऊ सुपरजाइंट्स घरेलू मैदान पर सीएसके से सावधान रहेगी

लखनऊ (एजेंसी)। आईपीएल में बुधवार दोपहर को होने वाले एक मैच में लखनऊ सुपरजाइंट्स की टीम अपने घरेलू मैदान पर चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) पर जीत के इरादे से उतरेगी। ये हालांकि उसके लिए आसान नहीं रहेगा क्योंकि पिछले मैच में आरसीबी से मिली हार से टीम का मनोबल गिरा हुआ है। उस मैच में टीम 128 रनों के छोटे से लक्ष्य को भी हासिल नहीं कर पायी थी। टीम का सकारात्मक पक्ष से है कि वह अपने घरेलू मैदान पर खेल रही है जिसका लाभ उसे मिलेगा पर टीम के कप्तान लोकेश राहुल और तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट के फिट नहीं होने का उसे नुकसान भी होगा। राहुल आरसीबी के खिलाफ इस मैच के दौरान चोटिल हो गए थे। उनकी दाहिनी जांघ में चोट लगी है।

वहीं उनादकट नेट्स पर गेंदबाजी करते समय फिसल गये थे। इसी कारण राहुल आरसीबी के खिलाफ 11वें नंबर पर बल्लेबाजी करने के लिए उतरे थे। ऐसे में उनका सीएसके के खिलाफ मैच में खेलना संदिग्ध नजर आता है। ऐसे में सुपरजाइंट्स की बल्लेबाज सुकाइल मायर्स, निकोलस पूरन, मार्कस स्टोइनिस और क्रुणाल पांड्या जैसे खिलाड़ियों पर टिकी रहेगी। कप्तान राहुल अबतक इस लीग में रनों के लिए संघर्ष करते नजर आये हैं।

आरसीबी के खिलाफ उसके सभी खिलाड़ी बल्लेबाजी में विफल रहे। टीम का कमजोर पक्ष ये है कि वह दबाव में बिखर जाती है। वह अभी नौ मैचों में 10 अंक लेकर आईपीएल अंक तालिका में तीसरे स्थान पर है पर आरसीबी से मिली हार के कारण उसके खिलाड़ी दबाव में रहेंगे।

वहीं दूसरी ओर महेन्द्र सिंह धोनी की सीएसके राजस्थान रॉयल्स और पंजाब किंग्स से मिली हार के कारण इस मैच में वापसी की उम्मीद के साथ उतरेगी। इस सत्र में अधिकतर मैच में उसकी जीत में धोनी की अहम भूमिका अहम रही है। ऐसे में धोनी इस मैच में टीम को जीत दिलाने के लिए कोई नई रणनीति बना सकते हैं। उसके सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे ने इस सत्र में अच्छी बल्लेबाजी की है। उन्होंने अब तक 144.25 की स्ट्राइक रेट से 414 रन बनाए हैं। पंजाब के खिलाफ पिछले मैच में उन्होंने नाबाद 92 रन बनाए थे पर इसके बाद भी उनकी टीम के गेंदबाज 200 रनों के अपने स्कोर का बचाव नहीं कर पाये थे। टीम के पास रुतुराज गायकवाड, रविंद्र जडेजा और अजिंक्य रहाणे जैसे अच्छे खिलाड़ी हैं। रुतुराज ने अब तक अच्छा खेला है। वहीं रहाणे आक्रामक बल्लेबाज के रुप में उभरे हैं।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं-

लखनऊ सुपरजाइंट्स: केएल राहुल (कप्तान), आवेश खान, आयुष बडोनी, क्विंटन डी कॉक, कृष्णप्पा गौतम, अर्पित गुलेरिया, दीपक हुड्डा, प्रेरक मांकड़, काइल मायर्स, अमित मिश्रा, मोहसिन खान, नवीन-उल-हक, क्रुणाल पंड्या, निकोलस पूरन, रवि बिश्नोई, डेनियल सैम्स, करण शर्मा, रोमारियो शेफर्ड, मार्कस स्टोइनिस, स्वप्निल सिंह, जयदेव उनादकट, मनन वोहरा, मार्क वुड, यश ठाकुर, युद्धवीर सिंह।

चेन्नई सुपर किंग्स: महेंद्र सिंह धोनी (कप्तान और विकेटकीपर), आकाश सिंह, मोइन अली, भगत वर्मा, दीपक चाहर, डेवोन कॉनवे, तुषार देशपांडे, शिवम दूबे, रुतुराज गायकवाड़, राजवर्धन हैंगरगेकर, रवींद्र जडेजा, सिसंडा मगाला, अजय मंडल, मथीशा पथिराना , ड्वेन प्रीटोरियस, अजिंक्य रहाणे, शैक रशीद, अंबाती रायडू, मिचेल सेंटनर, सुभ्रांशु सेनापति, सिमरजीत सिंह, निशांत सिंधु, प्रशांत सोलंकी, बेन स्टोक्स, महेश तीक्षणा।

गेंदबाज हैं जो किसी भी बल्लेबाजी आक्रमण पर अंकुश लगाने में सक्षम हैं।

भारतीय तीरंदाजों के एशिया कप दूसरे चरण में चार पदक पक्के

ताशकंद। भारतीय तीरंदाजों ने एशिया कप के दूसरे चरण में शानदार शुरूआत करते हुए रिकर्व और कंपाउंड वर्ग में चारों टीम स्पर्धाओं के फाइनल में प्रवेश कर लिया। पुरूषों के रिकर्व वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय टीम ने मेजबान उजबेकिस्तान को 6.0 (56.54, 57.54, 56.53) से हराया। भारतीय टीम में मृणाल चौहान, तुषार शेल्के और जयंत तालुकदार थे जबकि उजबेक टीम में चेन याओ यू, ए कारोरोव और आमिरखान सादिकोव शामिल थे। इससे पहले भारत ने किर्गीस्तान को भी इसी अंतर से मात दी थी। अब उनका सामना चीन से होगा। रिकर्व महिला टीम (संगीता, प्राची सिंह और तनीषा वर्मा) ने उजबेकिस्तान को टाइब्रेकर में 5 .4 (53.54, 56.49,52.50, 52.54, 26.26) से हराया। क्वार्टर फाइनल में भारतीय टीम ने सउदी अरब को 6 .0 से हराया था। अब उनका सामना चीन से होगा।

शास्त्री को धोनी के डब्ल्यूटीसी के लिए वापसी करने की उम्मीद नहीं

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने कहा है कि प्रशंसकों की तरह वह भी चाहते हैं कि पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज महेन्द्र सिंह धोनी को विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिए संन्यास से वापसी करनी चाहिये। शास्त्री के अनुसार इसके लिए टीम प्रबंधन को धोनी से अनुरोध करना चाहिये। साथ ही कहा कि धोनी वापसी करेंगे ऐसा उन्हें नहीं लगाता क्योंकि वह रिकार्ड के लिए नहीं खेलते ओर एक बार जो फैसला लेते हैं उनपर बने रहते हैं। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच डब्ल्यूटीसी का फाइनल 7 जून से इंग्लैंड के ओवल में खेला जाएगा। इस महामुकाबले के लिए 15 सदस्यीय भारतीय टीम की घोषणा हो गयी है। टीम के पास इस मैच के लिए विशेषज्ञ विकेटकीपर नहीं है। ऋषभ पंत कार हादसे के कारण अभी टीम से बाहर हैं। ऐसे में टीम के पास केएस भरत और लोकेश राहुल ही विकेटकीपर के तौर पर हैं। भरत ओर राहुल का विकेटकीपर के तौर पर प्रदर्शन कोई खास नहीं है। वहीं शास्त्री का मानना है कि हमें धोनी से रिटायरमेंट से वापस आने की अपील करनी चाहिए क्योंकि वो फिट लग रहे हैं और अभी भी आईपीएल में शानदार विकेटकीपिंग कर रहे। उन्होंने कहा, धोनी ने युवाओं को आईपीएल में बताया है कि कैसे विकेटकीपिंग की जाती है। वह कभी भी रिकॉर्ड के लिए नहीं खेले। जब उन्होंने टेस्ट से अलग होने का मन बनाया था तो कोई भी उसके फैसले को बदल नहीं पाया था। इसलिए उनकी वापसी की उम्मीद नहीं है।

बीसीसीआई ने आचारसंहित उल्लंघन के लिए विराट, गंभीर और नवीन पर लगाया जुर्माना

लखनऊ (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड बीसीसीसी ने आईपीएल में लखनऊ सुपरकिंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) के बीच सोमवार को हुए मुकाबले में आचार संहित उल्लंघन के लिए आरसीबी के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली, लखनऊ सुपर जाएंट्स के मेंटर गौतम गंभीर के साथ ही लखनऊ के खिलाड़ी नवीन उल हक को सजा सुनायी है। इस मैच में आरसीबी की जीत के बाद किसी बात को लेकर विराट और गंभीर के बीच बहस होने लगी। यह मामला इतना बढ़ा कि अन्य खिलाड़ियों को हस्तक्षेप करना पड़ा। इस मामले को बीसीसीआई ने गंभीरता से लेते हुए कोहली और गंभीर को कड़ी सजा सुनाई है। साथ ही वीन उल हक को भी सजा दी है। इस मामले में विराट और गौतम गंभीर पर 100 फीसदी जबकि नवीन-उल-हक पर 50 फीसदी मैच फीस का जुर्माना लगाया गया है।

कोहली और गंभीर की बहस इस मैच में इतनी बढ़ गयी थी कि अन्य खिलाड़ियों और स्टाफ को बीच में आना पड़ा। इस घटना का वीडियो भी आया है जिसमें लखनऊ टीम के अमित मिश्रा और आरसीबी के कप्तान फाफ डु प्लेसिस भी विवाद को शांत कराने का प्रयास करते दिखे। वहीं 17वें ओवर में नवीन उल हक मैदान पर कोहली के साथ बहस करते नजर आये। मैच के बाद भी नवीन कोहली के साथ विवाद करते दिखे। इसके अलावा जब कोहली काइल मेयर्स के साथ बात कर रहे थे तो गंभीर अचानक मेयर्स को कोहली से दूर ले जाते हैं। इस मामले में दो शीर्ष खिलाड़ी के खराब व्यवहार पर क्रिकेट प्रशंसकों ने नाराजगी भी व्यक्त की है। इससे खेल की छवि भी प्रभावित हुई है।

एशिया कप 2023 के लिए इस टीम ने क्वालिफाई कर रचा इतिहास, 39 वर्षों के इतिहास में पहली बार हुआ ऐसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेपाल क्रिकेट टीम ने इस बार इतिहास रच दिया है। नेपाल क्रिकेट टीम 39 वर्षों में पहली बार एशिया कप में हिस्सा लेगी। नेपाल क्रिकेट टीम ने पहली बार एशिया कप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। एसीसी प्रीमियर लीग के लिए नेपाल की टीम ने फाइनल मुकाबले में संयुक्त अरब अमीरात की टीम को हराकर एशिया कप में अपनी जगह बनाई है। नेपाल की टीम ने पहली बार ये उपलब्धि हासिल की है जो टीम के लिए बड़ी बात है। एसीसी प्रीमियर लीग में नेपाल की टीम ने छठी टीम बनकर अपनी जगह पक्की की है। इससे पहले एशिया कप के लिए पांच टीमें फाइनल हो चुकी थी, जिसमें भारत और पाकिस्तान की टीम भी शामिल है।

भारत और पाकिस्तान के अलावा इस टूर्नामेंट में मौजूदा चैंपियन श्रीलंका, बांग्लादेश, अफगानिस्तान की टीम भी खेलेंगी। इस टूर्नामेंट में अब नेपाल की टीम भी भिड़ती नजर आएगी। बता दें कि पिछली बार यूएई की टीम ने इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया था जबकि इस बार उस टीम को नेपाल से हार का सामना करना पड़ा है। बता दें कि अब तक एशिया कप के आयोजन के लिए वेन्यू फाइनल नहीं हुआ है। आधिकारिक तौर पर मेजबानी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पास है।

ऐसा रहा था दोनों टीमों का मुकाबला

कीर्तिपुर के त्रिभुवन यूनिवर्सिटी इंटरनेशनल क्रिकेट ग्राउंड में खेले गए मुकाबले में नेपाल की टीम ने पहले टॉस जीता और फिर गेंदबाजी चुनी। इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करते हुए संयुक्त अरब अमीरात की टीम ने 33.1 ओवर में सिर्फ 117 रन ही बनाए। इस मुकाबले में नेपाल की टीम ने सधी हुई गेंदबाजी की और लगातार संयुक्त अरब अमीरात के बल्लेबाजों को पवेलियन भेजने में सफलता हासिल की। नेपाल की ओर से लालजीत राजबंशी ने चार विकेट हासिल किए।

नेपाल ने सात विकेट से जीता मैच

नेपाल की टीम को जीत हासिल करने के लिए 118 रन का टारगेट तीन विकेट के नुकसान पर ही हासिल कर लिया। हालांकि टीम का पहला विकेट एक रन पर ही गिर गया था मगर इसके बाद गुलशन झा ने 67 रनों की नाबाद पारी खेलकर टीम को ऐतिहासिक जीत दिलाई। उनके साथ मिडिल ऑर्डर के बल्लेबाज भीम शर्की ने भी नाबाद 36 रन बनाए और टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई।

मेन्स वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में मोहम्मद हसामुद्दीन ने जीत के साथ की शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कुशल मुक्केबाज मोहम्मद हसामुद्दीन ने सोमवार को ताशकंद उज्बेकिस्तान में शानदार जीत दर्ज करके आईबीए मेन्स वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2023 में शानदार प्रदर्शन किया। उनके शानदार प्रदर्शन की बदौलत ही भारत की टूर्नामेंट में जीत के साथ शुरुआत हुई है।

दो बार के राष्ट्रमंडल खेलों के कांस्य पदक विजेता हसामुद्दीन 57 किग्रा ने पहले दौर में मैसेडोनिया के एलेन रुस्तमोव्स्की को 5-0 से हराकर जीत का आगाज किया है। इस मुकाबले में मोहम्मद हसामुद्दीन ने अपनी ताकत, उच्च तकनीकी क्षमता का उपयोग किया और जीत हासिल की। स्टार मुक्केबाज मोहम्मद हुसामुद्दीन ने प्रभावी प्रदर्शन करते हुए सोमवार को यहां आईबीए पुरुष विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में भारत के अभियान की शुरुआत शानदार जीत के साथ की। 60 किग्रा वर्ग में वरिंदर सिंह उज्बेकिस्तान के मुजीबिलो तुर्सुनोव से हार गए और 0-5 से हारकर प्रतियोगिता से बाहर हो गए।

मंगलवार को टोक्यो ओलंपियन और 2019 एशियाई चैंपियनशिप में आशीष चौधरी और नवोदित हर्ष चौधरी अपने-अपने टूर्नामेंट के सलामी बल्लेबाजों के लिए रिंग में उतरेंगे। आशीष 80 किग्रा ईरान के मेसम घेशलाघी से भिड़ेंगे, जबकि हर्ष 86 किग्रा का सामना ऑस्ट्रेलिया के बिली मैकलिस्टर से होगा। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने प्रतियोगिता के लिए 13 सदस्यीय टीम उतारी है। प्रतियोगिता में 107 देशों के कई ओलंपिक पदक विजेताओं सहित 538 मुक्केबाज हिस्सा ले रहे हैं। अब तक कुल सात भारतीय पुरुष मुक्केबाजों ने विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में पदक जीते हैं और देश के प्रतिभाशाली मुक्केबाज टूर्नामेंट के मौजूदा सत्र में इस संख्या को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।

श्रीजेश से सीखने को मिला : पवन

नई दिल्ली। भारतीय हॉकी टीम के युवा गोलकीपर पवन मलिक ने कहा है कि अनुभवी गोलकीपर पी आर श्रीजेश के साथ उन्हें काफी कुछ सीखने को मिला है। पवन ने मार्च में एफआईएच प्रो लीग में भारतीय टीम से खेला था। इस युवा गोलकीपर ने कहा है कि वह अनुभवी श्रीजेश से बड़ी टीमों के खिलाफ खेलने के दौरान दबाव का सामना करना सीख रहे हैं। 21 साल के मलिक ने राउरकेला में प्रो लीग में अपने शानदार प्रदर्शन से सभी का ध्यान खींचा था। उन्होंने कहा, '' जर्मनी और आस्ट्रेलिया जैसी शीर्ष टीमों के खिलाफ खेलना काफी दबाव भरा था। उनकी तेजी और आक्रमण अलग ही तरह का है जैसा मैंने अपने जूनियर दिनों में नहीं देखा। उन्होंने कहा, '' टीम ने मेरा पूरा साथ दिया और अनुभवी खिलाड़ियों से भी काफी सहायता मिली। साथ ही कहा कि पूर्व कप्तान श्रीजेश जैसे अनुभवी खिलाड़ी से काफी कुछ सीखने को मिला है, इससे मुझे दबाव का सामना करने में भी सहायता मिली है। उनके साथ खेलना सपना सच होने जैसा था इसके साथ ही मैं अपने प्रदर्शन पर भी ध्यान रखना चाहता था।

आईपीएल में धमाकेदार प्रदर्शन से टीम इंडिया में वापसी चाहते हैं विजय शंकर

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस की ओर से खेलत हुए ऑलराउंडर विजय शंकर ने कोलकाता नाइटस राइडर्स के खिलाफ आक्रामक बल्लेबाजी कर अपने इरादे साफ कर दिये हैं। विजय शंकर ने केकेआर के खिलाफ 200 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट से रन बनाये। उन्होंने 24 गेंदों में 2 चौके और 5 छक्के लगाकर 51 रन बनाए। कोलकाता के खिलाफ पिछले मैच में भी विजय ने 4 चौकों और 5 छक्?कों की सहायता से 24 गेंद में 63 रन बनाये थे। विजय शंकर अपने इस प्रदर्शन के जरिये टीम टीम में वापसी चाहते हैं। इस साल होने वाले एकदिवसीय विश्वकप पर भी उनकी नजरें हैं। साल 2019 एकदिवसीय विश्वकप में उन्हें अंतिम समय पर अंबाति रायडू की जगह स्थान मिला था और उसे फैसले की काफी आलोचना हुई थी। विजय शंकर का प्रदर्शन तब विश्वकप में अच्छा नहीं रहा था। पाकिस्तान के खिलाफ बड़े मुकाबले में वह केवल 15 रन ही बना पाये थे हालांकि गेंदबाजी में उन्हें दो विकेट मिले। विश्वक कप के बाद उन्हें बाहर कर दिया गया। विजय शंकर उसके बाद से ही टीम से बाहर हैं। वहीं विजय शंकर से टीम इंडिया में वापसी को लेकर पूछा गया तो उन्होंने कहा, ये चीज मेरे लिए बहुत दूर है. मैं अभी इसके बारे में नहीं सोच रहा हूं। अभी मेरा पूरा ध्यान आईपीएल में अपनी टीम की ओर से बेहतर प्रदर्शन पर है।

बीसीसीआई ने महिला टीम के कोच के लिए खोली वैकेंसी, सामने रखी ये शर्तें

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने मंगलवार को सीनियर महिला टीम के मुख्य कोच के पद के लिये आवेदन पत्र आमंत्रित किये। यह पद पिछले साल दिसंबर में रमेश पवार के राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) जाने के बाद से खाली पड़ा है। बीसीसीआई की ओर से प्रकाशित सूचना-पत्र के अनुसार, आवेदन पत्र दाखिल करने के वाले व्यक्ति के पास अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत या किसी अन्य देश के प्रतिनिधित्व का अनुभव होना चाहिये। ऐसा न होने पर व्यक्ति के पास कोचिंग में एनसीए का सी-श्रेणी का प्रमाण पत्र और 50 प्रथम श्रेणी मैचों का अनुभव होना चाहिये। यह दोनों शर्तें पूरी न होने पर अगर किसी व्यक्ति ने एक अंतरराष्ट्रीय टीम को एक क्रिकेटिंग सत्र के लिये या किसी टी20 फ्रेंचाइजी को दो सत्रों के लिये कोच के रूप में सेवा दी है तो वह आवेदन पत्र दाखिल कर सकता है। बीसीसीआई ने आयु मानदंड को लेकर कोई जानकारी नहीं दी है, हालांकि 60 वर्ष से अधिक के व्यक्ति को आमतौर पर बीसीसीआई नीति के तहत चयन के लिये पात्र नहीं माना जाता है। कोच की जिम्मेदारी मुंबई में आधारित होगी और उम्मीदवार को क्रिकेट कोचिंग सेटअप विकसित करने की आवश्यकता होगी। आवेदन की आखिरी तारीख 10 मई है, जिसके बाद बीसीसीआई आवेदकों को शॉर्टलिस्ट करेगा और उन्हें अशोक मल्होत्रा की अगुआई वाली क्रिकेट सलाहकार समिति को भेजेगा, जो बीसीसीआई संविधान के अनुसार साक्षात्कार आयोजित करेगी। भारतीय महिला टीम ने पिछले कुछ वर्षों में अपने कोचिंग स्टाफ में कई बदलाव देखे हैं। रमेश पवार के एनसीए में स्थानांतरण के बाद भारत इस साल दक्षिण अफ्रीका में आयोजित महिला टी20 विश्व कप में बिना मुख्य कोच के गया था।

बॉलीवुड नाम पसंद नहीं, कॉपी जैसा

आरंभ है प्रचंड बोले मस्तकों के झुंड इंस्टाग्राम हो या फेसबुक इस गाने पर बने रील्स ट्रेंड कर रहे हैं। ये गाना लिखने और गाने वाले एक्टर, राइटर, गीतकार और कवि पीयूष मिश्रा की फरवरी में एक किताब लॉन्च हुई। किताब का नाम है....तुम्हारी औकात क्या है इस किताब में उनकी जिंदगी और सफर से जुड़े कई किस्से हैं। इसमें उन्होंने बताया है कि कैसे उनके साथ सातवीं क्लास में यौन शोषण हुआ और वह कैसे इस सदमे से बाहर आए। पीयूष मिश्रा इस किताब को उनके पाप-पुण्य का लेखा-जोखा मानते हैं। इसके साथ ही वह बॉलीवुड से लेकर राजनीति में अपनी स्पष्ट राय रखते हैं।

बॉलीवुड के नाम पर आपको आपत्ति है?

मिश्रा ने कहा कि बॉलीवुड कॉपी किया हुआ नाम लगता है। हॉलीवुड नाम से इसे कॉपी किया गया। हॉलीवुड भी असली नाम था, हॉलीवुड अस्टेट एक जगह का था, वहां से अस्टेट नाम का बोर्ड गिर गया। वहीं से इन लोगों ने हॉलीवुड नाम रख लिया। बॉलीवुड नाम से बकवास लगता है, ओरिजिनल कुछ नहीं है क्या। कॉपीकैट बनकर क्यों रहना है। हिन्दुस्तानी फिल्म इंडस्ट्री है यह, हमारा पैसा लगता है। हमारी कहानियां हैं, फिर हमें क्यों कॉपी करना है। मैं तो बॉलीवुड कहना पसंद नहीं करता हूं।

साउथ और बॉलीवुड के मुकाबले की बाते हो रही हैं, आप क्या कहेंगे?

साउथ वाले बुद्धिमान हैं, यह तो कह ही सकता हूं। साउथ वाले रिस्क फैक्टर पर काम करते हैं। पुष्पा को ही देख लो.. कैसे एक आम आदमी की तरह दिखने वाली की कहानी को कहा गया। बाहुबली सबसे बड़ा उदाहरण है, वीएफएक्स को इतने बड़े स्केल पर देखा गया। पीएस फिल्म को देखिए कितना रिस्क फैक्टर है। साउथ में वीएफएक्स के साथ स्क्रिप्ट भी लिखी जाती है। इसे महत्वपूर्ण माना गया है वहां। बॉलीवुड में वीएफएक्स महत्वपूर्ण माना जाता है, स्क्रिप्ट को तो कभी भी बदल लेते हैं। बाहुबली, पुष्पा, केजीएफ की अपनी अलग स्क्रिप्ट रही है।

थिएटर आपके लिए हमेशा प्राथमिकता रहा है?

सिनेमा मेरे लिए ऑक्यूपेशन है, पैशन नहीं है। पैसे कमाता हूं, घर चलता हूं। आज भी फिल्में मिल रही हैं। मृत्यु का अहसास कर लिया है, 15-20 साल में मर जाऊंगा, ऐसे में वह करना है, जो अभी तक नहीं कर पाया। छोटे शहरों में जाता हूं, बच्चों से बात करता हूं। इंडस्ट्री की जिज्ञासाओं को शांत करता हूं। थिएटर मेरी प्रायोरिटी में है। थिएटर को यदि कोई कर नहीं पा रहा है और उसका कारण यह बताता है कि मेरे पास समय नहीं रहता, तो वह बकवास कर रहा है। उसे यह कहना चाहिए कि थिएटर उसकी प्रायोरिटी नहीं है। इसमें कोई गलत बात नहीं होगी।

म्यूजिक बैंड बल्लीमारान का सफर कैसा है?

इस समय यह देश के सबसे महंगे बैंड्स में शामिल है। आसानी से डेट्स भी नहीं मिल पाती। देश-दुनिया में हम परफॉर्म कर रहे हैं। 70 के दशक के म्यूजिक के साथ हम आज के म्यूजिक पर बात करते हैं। मेरे गीतों को अलग अंदाज में प्रस्तुत करते हैं। लोगों से बात करते है और यही लोगों को पसंद आता हैं।

किंग चार्ल्स के कोरोनेशन कॉन्सर्ट में शामिल होंगी सोनम

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनम कपूर 7 मई को किंग चार्ल्स के कोरोनेशन कॉन्सर्ट में लियोनेल रिची, कैटी पेरी और टॉम क्रूज जैसे आइकन के साथ मंच साझा करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्हें बहुप्रतीक्षित किंग चार्ल्स 3 के कोरोनेशन कॉन्सर्ट में एक एक्सक्लूसिव स्पोकन वर्ड पीस देने के लिए आमंत्रित किया गया है, जहां वह 7 मई को विंडसर कैसल, यूनाइटेड किंगडम में स्टीव विनवुड और विशेष कॉमनवेल्थ वर्चुअल गाना गाने वालों का परिचय देंगी। 6 मई को, महामहिम राजा और महारानी पत्नी का राज्याभिषेक वेस्टमिंस्टर एब्बे में आयोजित किया जाएगा, जिसके बाद 7 मई को विंडसर कैसल में एक उत्सव समारोह आयोजित किया जाएगा।

कॉन्सर्ट में ग्लोबल म्यूजिक आइकन और समकालीन सितारे ऐतिहासिक अवसर का जश्न मनाएंगे। इस अवसर पर, सोनम ने उल्लेख किया- इस समारोह के लिए कॉमनवेल्थ वर्चुअल क्वायर में शामिल होकर मैं सम्मानित महसूस कर रही हूं। यह एक महत्वपूर्ण अवसर है जो यूनाइटेड किंगडम के लिए एक सकारात्मक, समावेशी और आशावादी भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, और एकता, शांति और आनंद को बढ़ावा देता है। उनका परिचय देते हुए, सोनम इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में उपस्थित होने और भाग लेने वाली एकमात्र भारतीय हस्ती होंगी। ह्यूग बोनेविले द्वारा आयोजित, संगीत कार्यक्रम जनता के 20,000 सदस्यों और आमंत्रित अतिथियों के साथ-साथ दुनिया भर में देखने वाले लाखों लोगों के सामने महामहिम राजा और रानी के राज्याभिषेक का जश्न मनाएगा। इसमें कैटी पेरी, लियोनेल रिची, एंड्रिया बोसेली, सर ब्रायन टेरफेल, फ्रेया राइडिंग्स, एलेक्सिस फ्रेंच जैसे कलाकार और दूसरों के बीच पांच रॉयल संरक्षकों का सहयोग शामिल होगा, जबकि टॉम क्रूज, डेम जोन कोलिन्स और सर टॉम जोन्स सहित सितारे वीडियो मैसेज के माध्यम से दिखाई देंगे।

केआरके के निशाने पर सारा अली खान

खुद को क्रिटिक्स बताने वाले केआरके अक्सर अपने ट्वीट को लेकर खबरों में बने रहते है. एक्टर बॉलीवुड फिल्मों और एक्टर्स का मजाक उड़ाने में कभी पीछे नहीं हटते. ऐसा बहुत कम होता है, जब वो किसी की तारीफ में कुछ कहते है. इस बीच कमाल राशिद खान के निशाने पर बॉलीवुड एक्ट्रेस और सैफ अली खान की बेटी सारा अली खान आ गई. सारा का मजाक उड़ाते हुए उन्होंने ट्वीट किया है. केआरके ट्वीटर पर काफी एक्टिव रहते है. लेटेस्ट ट्वीट उन्होंने सारा अली खान को लेकर ट्वीट किया है. कमाल राशिद खान लिखते है, देखो बुरा वक़्त तो कभी भी आ सकता है, जैसे सारा अली ख़ान का आया है! आज बेचारी को कोई फिल्म देने को तैयार नहीं है! तो बेचारी शहनाज गिल के थके हुए शो में गई! यहां तक कि क्रिटिक भी बन गई है! सारा अली खान को आखिरी बार गैसलाइट में देखा गया था, जो 31 मार्च को डिज्नी + हॉटस्टार पर रिलीज़ हुई थी. वह कन्नन अय्यर द्वारा निर्देशित ऐ वतन मेरे वतन नामक प्राइम वीडियो पीरियड ड्रामा में भी काम कर रही है. इसके अलावा आगामी फिल्म मेट्रो इन दिनों को भी लेकर चर्चा में है. इसमें उनके साथ आदित्य रॉय कपूर है. इसमें अनुपम खेर, नीना गुप्ता, फातिमा सना शेख और अली फजल भी होंगे.

दीपिका के साथ पहली बार दिखेंगी करीना

सर्कस की असफलता के बाद रोहित शेट्टी ने अपनी अगली फिल्म सिंघम अगेन की तैयारी शुरू कर दी है। इस फिल्म का संकेत उन्होंने सूर्यवंशी के अन्तिम दृश्य में दिया था, जहाँ अजय देवगन जैकी श्रॉफ को ललकारते हुए कहते हैं कि आ रहा हूँ मैं तेरे को नेस्तनाबूद करने। इस फिल्म की शूटिंग इस वर्ष के अन्त में शुरू होगी और यह आगामी वर्ष स्वतंत्रता दिवस सप्ताह में प्रदर्शित की जाएगी। रोहित शेट्टी की साख इस फिल्म से लगी हुई है, क्योंकि उनकी पिछली फिल्म सर्कस सिनेमाघरों से अपनी लागत निकालने में असफल रही थी। इस फिल्म में एक बार फिर बाजीराव सिंघम के रूप में अजय देवगन की धमाकेदार एंट्री होने वाली है। फिल्म के ऐलान से ही रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स के प्रशंसक उछल पड़े थे। अपने प्रशंसकों का क्रेज अगले लेवल पर पहुंचाने के लिए निर्देशक रोहित शेट्टी ने ये भी ऐलान किया कि इस बार उनकी इस कॉप यूनिवर्स की फिल्म में लेडी कॉप की भी एंट्री होगी। जिसके बाद उन्होंने इस रोल के लिए अदाकारा दीपिका पादुकोण के नाम का भी खुलासा कर दिया था। अब इस फिल्म को लेकर एक और दिलचस्प जानकारी सामने आई है। चर्चा है कि अजय देवगन और रोहित शेट्टी की ब्लॉकबस्टर सिंघम अगेन में अदाकारा करीना कपूर खान भी शामिल कर ली गई हैं। करीना कपूर खान इस फिल्म फ्रेंचाइजी के दूसरे पार्ट में भी दिखाई दी थी। समाचारों के अनुसार अदाकारा फिल्म के तीसरे पार्ट में भी अजय देवगन के अपोजिट लीड रोल में नजर आएंगी। हालांकि अभी ये साफ नहीं है कि उनका किरदार अवनी कामत का ही होगा या फिर इसमें कोई बदलाव होगा। दिलचस्प बात यह है कि अदाकारा दीपिका पादुकोण पहले से ही सिंघम अगेन का हिस्सा बन चुकी हैं। इस फिल्म में एक्ट्रेस लेडी कॉप का कैरेक्टर प्ले करेंगी। ऐसे में करीना कपूर खान और दीपिका पादुकोण पहली दफा साथ में स्क्रीन स्पेस शेयर करती दिख सकती हैं। सिंघम का अपना एक अलग दर्शक वर्ग है जो इस फ्रेंचाइजी को पसन्द करता रहा है।

पठान का क्रेडिट शाहरुख से कोई छीन नहीं सकता

सलमान खान का कहना है कि पठान को हिट कराने में उनकी कोई भूमिका नहीं है। एक रिसेंट इंटरव्यू में होस्ट द्वारा उन्हें शाहरुख की फिल्म पठान को हिट कराने का श्रेय दिया गया। जवाब में सलमान ने कहा कि ये क्रेडिट शाहरुख खान से कोई नहीं छीन सकता। सलमान ने कहा कि शाहरुख ने फिल्म में काफी अच्छा काम किया है इसलिए इसकी सफलता के सबसे बड़े हकदार वही हैं। जाहिर है कि सलमान ने पठान में कैमियो किया था। उनके 10 मिनट के कैमियो को ऑडियंस ने काफी पसंद किया था। सलमान खान हाल ही में आप की अदालत में नजर आए। वहां उनका इंटरव्यू ले रहे होस्ट रजत शर्मा ने सलमान से पठान से जुड़ा सवाल किया। अभी उनकी बात खत्म होती तभी सलमान ने बीच में कहा, पठान का इंतजार फैंस काफी वक्त से कर रहे थे। ये सभी फैंस, शाहरुख की फिल्म देखने के लिए तरस गए थे और एक राइट टाइम, राइट मौके पर ये फिल्म आई। शाहरुख और आदित्य चोपड़ा से कोई क्रेडिट छीन नहीं सकता। मुझे लगता है ये हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की सबसे बड़ी हिट फिल्म बन गई है।

फिल्मफेयर मंच पर वर्षों बाद एकसाथ नजर आए सलमान-गोविन्दा

सलमान खान और गोविंदा ने 68वें फिल्मफेयर अवार्ड्स 2023 में एक जबरस्त परफॉर्मेंस दी, इवेंट से जुड़ा एक वीडियो सामने आया है। प्रोमो वीडियो में दोनों एक्टर्स अपनी ही फिल्म पार्टनर के गाने डू यू वाना पार्टनर पर ठुमके लगाते हुए नजर आए। वीडियो में 59 साल के गोविंदा स्टेज पर अपनी परफॉरमेंस दे रहे थे। तभी इवेंट के होस्ट सलमान खान भी उनके साथ मंच पर शामिल हुए और दोनों ने पार्टनर के गाने पर डांस किया है।

जहां सलमान ब्लू सूट में काफी हैंडसम लग रहे हैं। वहीं गोविंदा ऑल ब्लैक सूट में नजर आए। सोशल मीडिया पर फैंस इस वीडियो को काफी पसंद कर रहे हैं। गौरतलब है कि सुपरस्टार सलमान खान और गोविंदा ने 2007 में डेविड धवन की पार्टनर में एक साथ काम किया था, जिसमें उनकी केमिस्ट्री और कॉमिक टाइमिंग को प्रशसंकों से काफी सराहना मिली थी। अब इस वीडियो को देखने के बाद प्रशंसकों की पुरानी यादें ताजा हो गई। कई फैंस ने वीडियो पर कमेंट करते हुए पार्टनर 2 को लाने की इच्छा जताई है। 27 अप्रैल की रात को मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में 68वें फिल्मफेयर अवार्ड्स 2023 का आयोजन किया गया। इस इवेंट में कई बड़े सितारे शामिल हुए। इवेंट की मेजबानी सलमान खान ने की। वहीं मनीष पॉल और आयुष्मान खुराना ने उनका साथ दिया।

जबरदस्त एक्शन से भरपूर है प्रियंका की सिटाडेल

प्रियंका चोपड़ा जोनस और रिचर्ड सीरीज- सिटाडेल में नाडिया सिंह और मेसन केन के रोल में हैं। उनका वह संगठन आजाद है। ठेके पर किसी भी देश की सुरक्षा का जिम्मा लेता है। उनका कार्यक्षेत्र पूरी दुनिया है। दोनों बेहद ताकतवर हैं, पर उन्हें और उनके संगठन के खिलाफ काम करने वाले भी लोग हैं। उनके नाम डालिया आर्चर और आंडेर्स सिजी हैं। इनके संगठन का नाम मॉनिकोर है। यहां कहानी सिटाडेल और मॉनिकोर के उम्दा जासूसों के बीच वर्चस्व की लड़ाई के बारे में है। नाडिया और मेसन के सहयोगी बर्नार्ड ऑरलिक हैं। उन्हें दुश्मन जासूसों के नापाक मंसूबों को रोकना है। इसके लिए नाडिया और मेसन की सख्त जरूरत है। इस मोर्चे पर हालांकि बर्नार्ड ऑरलिक के सामने एक चुनौती है। वह यह कि नाडिया और मेसन की याद्दाश्त इटली के एक ट्रेन धमाके में जा चुकी है, जो उनके अपने ही संगठन के एक गद्दार का नतीजा है। साथ ही जासूसी के हिम्मती कारनामों से नाडिया और मेसन आठ साल से दूर भी हैं। इस परिस्थिति में भी नाडिया और मेसन से कैसे काम लिया जाता है और वो किस तरह संगठन के गद्दार को ढूंढ निकाल पाते हैं कि नहीं और डालिया आर्चर के मकसद को रोक पाते हैं कि नहीं, यह सीरीज उस बारे में है। सिटाडेल को जिस इरादे से क्रिएट किया गया है, वह यहां पूरी तरह जस्टिफाइड हुआ है। बड़े जासूसी संगठनों से ताल्लुक रखने वाले जासूसों के एक्शन और उनके हथियार, जगहें जहां उनकी मुठभेड़ होती हैं, सब कुछ को विहंगम स्केल यानी पैमाना प्रदान किया गया है। इटली में ट्रेन धमाके के बीच नाडिया, मेसन की दुश्मन संगठनों से जंग का सीक्वेंस आगे आने वाले घटनाक्रमों की रफ्तार और मिजाज को सेट कर देता है।

अफवाह का हिस्सा बनना एक प्रेरक अनुभव रहा - भूमि

अपनी दिलचस्प कहानी और प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ, सुधीर मिश्रा की अफवाह साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक होने वाली है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी और भूमि पेडनेकर की मुख्य भूमिकाओं वाली यह फिल्म खतरनाक अफवाहों के खिलाफ खड़े होने और लोगों के जीवन पर उनके प्रभाव के विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। भूमि पेडनेकर के लिए अफवाह का हिस्सा बनना एक प्रेरक अनुभव रहा है। अभिनेत्री का कहना है, अफवाह एक ऐसी कहानी है जो समय की जरूरत है। अफवाहों में बहुत ताकत होती है और यह महत्वपूर्ण है कि हम उनके खिलाफ खड़े हों। जब कहानी मुझे सुनाई गई, तो मैं तुरंत उससे जुड़ गई। अपने विचारोत्तेजक संदेश और प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ, अफवाह निश्चित रूप से दर्शकों पर स्थायी प्रभाव छोड़ेगा। विचित्र थ्रिलर की रिलीज के लिए बने रहें और खतरनाक अफवाहों के खिलाफ खड़े होने के महत्व के बारे में प्रचार करने में हमारे साथ शामिल हों। अफवाह का निर्देशन सुधीर मिश्रा ने किया है। फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी, भूमि पेडनेकर, शारिब हाशमी, सुमित कौल, सुमीत व्यास, रॉकी रैना और टीजे भानु हैं। फिल्म का निर्माण अनुभव सिन्हा ने अपने बैनर बनारस मीडिया वर्क्स के तहत किया है और यह 5 मई 2023 को रिलीज होगी।